विज्ञान समिति, उदयपुर

विज्ञान समिति उदयपुर

स्वर्ण जयन्ती समारोह

55 वर्षीय गौरवशाली

एवं

बहुउद्देशीय विकास यात्रा

1959–2015

विज्ञान समिति का जन्म

जब हुआ देश आजाद सन् 1947 में
था वातावरण उल्लास का
उत्साह का, उमंग का
शिष्टता का, सदाचार का, संवेदनशीलता का
गौरव का, गतिशीलता का, गंभीरता का

थे नेता आदर्श, कर्मठ
देशभक्त, चरित्रवान
त्यागी, बलिदानी
समर्पित, सादगीपूर्ण

बनाया संविधान
खड़ी की मूलभूत संस्थाएं
प्रारंभ की पंचवर्षीय योजनाएं
लिया संकल्प शिक्षा फैलाने का
गरीबी मिटाने का
अंधविश्वास हटाने का
विश्वसनीयता स्थापित करने का
देश को शक्तिशाली बनाने का

ऐसे प्रेरणादायी वातावरण में
देश के संवेदनशील युवा
युवतियों में जगी भावना
देश निर्माण में जुड़ने की

अपने-अपने अनुभव
और समझ से कुछ करने की
इसी भावना के अनुरूप
मुझ युवा को भी मिला बोध
अज्ञान स्रोत से मिली प्रेरणा

अपने वैज्ञानिक कार्य के साथ
स्वैच्छिक सेवा कार्य करने की
जो हो देश निर्माण की धारा में
हुआ चिंतन मनन परिवार में
मिला आशीष पूज्य पिताजी और मां का
मिला आश्वासन धर्मपत्नी से सहयोग का
बना विचार कार्य पैतृक गांव से करने का
और ठाकुर केप्टन दौलतसिंह का
आवश्यकता थी शुभ दृष्टि और सहमति
मेरे बॉस प्लांट पैथोलोजिस्ट डॉ. एन. प्रसाद की
बढ़ाया खूब उत्साह उन्होंने और दिया संबल
लिया सुझाव मेरे मित्र डॉ. के.बी. शर्मा का

निश्चित हुआ संस्था बनाना
निश्चित हुआ 'विज्ञान समिति' नाम
हुआ उद्घाटन डॉ. एन.प्रसाद द्वारा
केलवा रावले में ठाकुर सा. की अध्यक्षता में
दिन था 28 अगस्त 1959

उपस्थित थे मेरे सारी साथी विभाग के
उपस्थित थे पी.एम.ओ. उदयपुर क्षेत्र
उपस्थित थे मेरे मित्र मि. डॉ. कन्हैयालाल शर्मा
उपस्थित थे मेरा परिवार ग्रामवासी और सरपंच
किया स्थापित केलवा रावले में
एक विज्ञान केन्द्र जो बना
स्थान आकर्षण और ज्ञान अर्जन का

दिया चंदा एक-एक रुपये का गांववासियों ने
और दिया आर्थिक सहयोग विकास अधिकारी
राजसमन्द शक्तावत श्री देवेन्द्र जी ने
व्यथा-कथा है यह संक्षिप्त विज्ञान समिति
के जन्म की स्वर्ण जयन्ती समारोह पर मिले
शुभकामनाएं आप सब की

—डॉ. के.एल. कोठारी

विज्ञान समिति के आधार स्तम्भ

पूर्व अध्यक्ष :

1. कैप्टिन ठाकुर दौलतसिंह, केलवा, राजसमन्द
2. श्री जगमोहनलाल माथुर, पूर्व अतिरिक्त निदेशक, कृषि, राजस्थान
3. श्री के.एल.सहगल, पूर्व ओ.एस.डी., हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर
4. डॉ. डी.के.मिश्रा, पूर्व निदेशक, कृषि विस्तार निदेशालय, रा.कृ.वि.वि., उदयपुर
5. डॉ.बी.भण्डारी, पूर्व प्राचार्य, र.ना.टे., आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर
6. इंजी.एच.वी.पालीवाल, पूर्व निदेशक, हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर
7. इंजी. ललित बिहारी बक्षी, पूर्व मुख्य अभियन्ता, सा.नि.वि., राजस्थान सरकार
8. श्री एम.एल.मेहता, आई.ए.एस., पूर्व मुख्य सचिव, राजस्थान
9. डॉ.पी.एल.अग्रवाल, पूर्व चैयरमैन, सेल, भारत सरकार

पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष : डॉ. के.एल.कोठारी, डॉ.एन.एल.गुप्ता
डॉ. के.बी. शर्मा, इंजी. राजेन्द्र कुमार चतुर

पूर्व सचिव : डॉ. के.एल. कोठारी, प्रो. सुरेश मेहता,
डॉ. एम. के. भटनागर, डॉ. के.पी. तलेसरा

प्रमुख संरक्षक सदस्य : श्री महेन्द्र प्रताप—श्रीमती शीला बया,
श्री मदनसिंह —श्रीमती लीला सुराणा

प्रधान संरक्षक सदस्य : श्री राजकुमार सुराणा, भारतीय इस्पात
प्राधिकरण, हिन्दुस्तान जिंक लि.

विज्ञान समिति की विकास यात्रा

रजत जयन्ती काल

डॉ. के. एल. कोठारी

vk/kkj&Hkfe %

वर्ष 1958, देश को आजाद हुए 11 वर्ष और गणतन्त्र बने 8 वर्ष हो चुके थे। स्वतन्त्रता सेनानियों के संघर्ष, बलिदान एवं गांधीजी के अहिंसात्मक आन्दोलनों की कहानियां ताजा थी। राष्ट्र निर्माण के लिए पंचवर्षीय योजनाएं प्रारम्भ हो चुकी थी। ऐसे माहौल में मेरे युवा मन में स्वैच्छिक सेवा की भावना जगी और तीव्र होती गई। नौकरी छोड़कर पूर्ण स्वैच्छिक सेवा के लिए समर्पित हो जाना, आर्थिक स्थिति की दृष्टि से संभव नहीं था। अतः अतिरिक्त समय को ही स्वैच्छिक सेवा के लिए समर्पित करने का निश्चय किया।

कार्य की दिशा का चयन करने के लिए निम्नांकित बिन्दुओं ने प्रभावित किया –

- तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने आह्वान किया था कि विज्ञान को लोकप्रिय किया जाय और गांवों में भी इसका प्रसार हो।
- उदयपुर के पास डबोक में भारत सरकार का एक विज्ञान मन्दिर था जिसमें श्री पी.डी. गेमावत अधिकारी थे। वे प्लान्ट पेथोलॉजी के वैज्ञानिक थे। उन्होंने विज्ञान मन्दिर दिखाया। उसे देखकर हृदय में कुछ भावनाएं जगी।
- हमारी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि एवं अभिरुचि – मैंने जसवन्त कॉलेज, जोधपुर (राज. विश्वविद्यालय) से वनस्पतिशास्त्र में M.Sc. (1958) की और राजस्थान कृषि विभाग के पौध व्याधि विज्ञान (Plant Pathology) प्रभाग में जो उस समय समोर बाग, उदयपुर में स्थित था, विख्यात वैज्ञानिक डॉ. एन. प्रसाद के अन्तर्गत मुझे अनुसंधान सहायक (Research Assistant) के गजटेड पद पर नियुक्ति मिली। 20 अगस्त, 1958 से कार्य प्रारम्भ किया। यह पद क्रोप्स डिजिज सर्वे स्कीम के अन्तर्गत था। हम दो अनुसंधान सहायक और एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सर्वेक्षण कार्य के लिए विभिन्न क्षेत्रों में जाया करते थे। इस दौरान पंचायत समितियों के कई कृषि प्रसार अधिकारियों से मिलना होता था।
- कृषि प्रसार अधिकारियों से भेंट के दौरान यह अनुभव हुआ कि सामान्य वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार की आवश्यकता है और छोटी–छोटी जानकारियों से समाज को काफी लाभ हो सकता है।

chtkdj.k %

उक्त परिस्थितियों में यह निर्णय हुआ कि विज्ञान के प्रचार–प्रसार का कार्य स्वैच्छिक सेवा के रूप में किया जाय। मेरी पत्नी ने मेरे इस प्रस्ताव को संबल दिया और मित्रों व सहकर्मियों ने

भी सहयोग दिखाया। अपने गांव से ही इस कार्य को प्रारम्भ करना व्यावहारिक समझा। मेरी माता श्रीमती कज्जू देवी से आशीर्वाद लेकर पिता श्री शेषमलजी से अपनी इच्छा बताई तो उन्होंने इस भावना और उत्साह को सराहा और राय दी कि केलवा ठाकुर सा. श्री दौलतसिंह जी से इस संबंधी मार्गदर्शन और सहयोग लिया जाय। मैं ठाकुर सा. से मिला और अपना प्रस्ताव बताया तो उन्होंने उसे बहुत उत्साहपूर्वक लिया और अपनी मेवाड़ी भाषा में कहा कि ''आप जो सुझाव दीदो है वणी यूं मने अतरो जोश आयो जतरो दो बोतल दारू पीवाऊं आवतो, आप ठिकाना री कचहरी रो हॉल अणी गामरे सुधार वास्ते काम में लो। मारी जीप गाड़ी और मने भी जटे ले जाणो वे वटे लेइ चालो। गांव रा कम्पाउण्डर जी ने और थोड़ा सेवाभावी लोगों ने साथ लेइ ने काम चालू करो।''

इस उत्साहवर्द्धक संबल ने ही विज्ञान समिति को जन्म दिया। ठाकुर सा. को प्रथम अध्यक्ष बनाया। मैं सचिव बना और गांव के कुछ लोग मा.सा. अली मोहम्मद जी जो उस वक्त सरपंच थे, डिस्पेन्सरी के कम्पाउण्डर सा., गावंवासी श्री मूलचन्द जी कोठारी, श्री वरदीचन्द जी कोठारी आदि सदस्य बने। ठाकुर सा. की कचहरी के हॉल में एक सुन्दर केन्द्र स्थापित हुआ जिसमें कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य संबंधी चित्र, पोस्टर, छोटी पुस्तिकाओं के शोकेसेज लगे।

mn?kkVu %

मेरे प्रभारी अधिकारी डॉ. एन. प्रसाद स्वयं एक विशाल व्यक्तित्व के धनी थे। केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, अमेरिका में उन्होंने फफूंदों (Fungi) पर गहन अध्ययन किया था। गुजरात में कुछ समय रहने के बाद राजस्थान में स्टेट प्लान्ट पेथोलोजिस्ट के पद पर आए। ऐसे प्रख्यात वैज्ञानिक और विद्वान व्यक्तित्व के धनी डॉ. एन. प्रसाद के निर्देशन में मुझे कार्य करने का अवसर मिला। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात रही। उनसे भी इस कार्य के लिए आशीर्वाद और मार्गदर्शन लिया। उन्होंने भी उत्साहवर्द्धन किया। ठाकुर सा. से बात कर यह तय रहा कि डॉ. प्रसाद से ही इस केन्द्र का उद्घाटन करवाया जाय। ठाकुर सा. स्वयं उदयपुर पधारे और डॉ. प्रसाद को निवेदन किया। डॉ. प्रसाद ने स्वीकृति दी। उद्घाटन का दिवस 28 अगस्त, 1959 तय हुआ। उस दिन मेरे प्लान्ट पेथोलोजी के सभी साथी श्री एस.पी. सहगल, श्री आर.डी. सिंह, श्री जे.पी. अग्निहोत्री, श्री इब्राहम अली, श्री लक्ष्मीचंद शर्मा, श्री गिरीश भटनागर, श्री आर.एन.एस. त्यागी, श्री बी.एन. माथुर, जिला पशुपालन विभाग से मेरे मित्र डॉ. के. बी. शर्मा, प्रमुख जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.पी. एल.ऋषि (पी.एम.ओ.), ग्रामवासी एवं मेरे पिताश्री उपस्थित थे। यह सुन्दर कार्यक्रम रावले की बैठक में सम्पन्न हुआ।

xfr'khy pj.k %

मैं लगभग हर रविवार केलवा पहुंच जाता। डिस्पेन्सरी के कम्पाउण्डर केन्द्र को रोज खोलते। लोग आते और कुछ पढ़ते, चर्चा करते। पंचायत समिति, राजसमन्द के विकास अधिकारी श्री देवेन्द्रसिंह शक्तावत राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी थे। उन्होंने कुछ शो केसेज के लिए आर्थिक सहयोग दिया। मुझे प्लान्ट पेथोलोजी में रहते–रहते अच्छे शो केसेज तैयार करने का अनुभव हो गया था। अतः आकर्षक शो केसेज केन्द्र पर लगे। केन्द्र में सामग्री बढ़ती रही। गांव में यह एक आकर्षक दर्शनीय केन्द्र बन गया।

- जलदाय विभाग के उदयपुर कार्यालय में

मेरे परिजन श्री राजमलजी भंडारी जूनियर इंजीनियर थे। गांवों में नल लगने की पहली योजना राज्य सरकार ने उदयपुर जिले के लिए स्वीकृत की थी। इस योजना के अन्तर्गत मैंने गांव की पंचायत से प्रार्थना पत्र लेकर विभाग को सुपुर्द किया और जो भी आवश्यकताएं और हुई उसे बार–बार जाकर पूरा करवाया और उदयपुर जिले की प्रथम नल योजना केलवा में स्वीकृत हुई और यथाशीघ्र प्रारम्भ हुई।

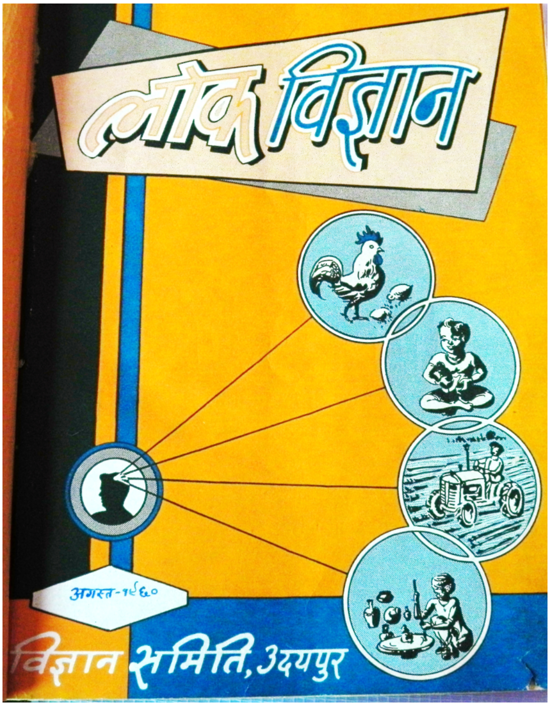

- सन् 1961 में हमने विज्ञान समिति का पुनर्गठन किया। नये सदस्य बनाये और नई कार्यकारिणी बनी, जिसमें तत्कालीन उप निदेशक (कृषि) श्री जगमोहन माथुर को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। मैं सचिव तथा डॉ. के. बी. शर्मा कोषाध्यक्ष बने।

- सन् 1987 में डॉ. एस. एल. इंटोदिया की अगुवाई में सर्वेक्षण कार्य कराया। कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य के क्षेत्र में चेतना बढ़ाने के छोटे–छोटे कार्य हाथ में लिये। इन कार्यों से जानकारी का प्रसार हुआ। ग्रामवासियों की मनःस्थिति को भी समझने का अवसर मिला तथा उनमें विश्वास भी जमता गया। जागरूकता के कार्यों में कृषि विभाग, विश्वविद्यालय, पशुपालन विभाग, स्वास्थ्य विभाग, डीआरडीए आदि का सहयोग लेते रहे। इन कार्यों को गांव के स्तर पर आयोजित करने में चंदेसरा के सरपंच श्री भेरूलाल जी इंटोदिया का काफी सहयोग रहा।

- सन् 1987 में ही हिन्दुस्तान जिंक के निदेशक और हमारे मित्र श्री एच. वी. पालीवाल सा. को समिति का अध्यक्ष बनाया। इस वर्ष का दूसरा कार्य रहा–नउआ गांव के 60 हेक्टर भूमि में 60,000 पौधारोपण द्वारा वन विकास का यह कार्य श्री सुरेश मेहता की अगुवाई में हुआ। 1987 का वर्ष अकाल वर्ष था। जो पौधे लगाए, उनको जीवित रखने के लिए पानी पिलाने का कठिन कार्य किया। अगले वर्ष में जो पौधे मर गए थे, उनके स्थान पर पुनः पौधारोपण किया गया। यह प्रक्रिया तीसरे और चौथे वर्ष भी चलती रही।

Ykksd foKku dk izdk'ku %

विज्ञान समिति की दूसरी गतिविधि के रूप में एक प्रकाशन का सोच बना। कुछ मित्रों एवं साथियों से चर्चा की और यह निश्चय हुआ कि एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हो, जिसमें कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, गृह–विज्ञान एवं सामान्य विज्ञान के विशेषज्ञों के लेख हिन्दी भाषा में प्रकाशित हों।

रजिस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर्स को तीन नाम इस प्रकाशन के लिए भेजे गए जिसमें पहला नाम 'लोक विज्ञान' स्वीकृत हो गया।

2 दिसम्बर, 1959 को मेरे निवास स्थान 443, भूपालपुरा, उदयपुर पर हम लोक विज्ञान के

प्रकाशन सम्बन्धी बैठक कर रहे थे कि मेरी बेटी रेणु के जन्म का समाचार मिला। बैठक में निम्नांकित निर्णय किये गये –

1. पत्रिका के 5 खंड रखे जाय। (कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, गृहविज्ञान एवं सामान्य विज्ञान)
2. इन खंडों के अन्तर्गत उपयोगी विषयों पर विशेषज्ञों के लेख पर सरल हिन्दी में हों। लगभग 40 पृष्ठ।
3. प्रत्येक खंड के लिए एक या दो विशेषज्ञों का संपादक मंडल बनाया जाय।
4. एक कार्यकारी सम्पादक हो।
5. मेरा निवास ही पत्रिका का कार्यालय हो।
6. समिति के अध्यक्ष डॉ. केप्टीन दौलतसिंह जी पत्रिका के संरक्षक होंगे।
7. लोकविज्ञान का प्रकाशक सचिव विज्ञान समिति होगा।
8. पत्रिका सरस्वती प्रेस से छपाई जाय।
9. पत्रिका का खर्चा विज्ञापन से निकाला जाय, विज्ञापन की दरें निम्नानुसार तय की गई –
    - पूरा पृष्ठ – 40/रु.
    - आधा पृष्ठ – 20/–रु.
    - चौथाई पृष्ठ – 10/–रु.
10. समिति की भावनाओं के अनुसार लेखकों को कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाय।
11. पत्रिका का वार्षिक शुल्क 6 रु. रखा जाय।

दूसरी बैठक में लोक विज्ञान का संपादक मण्डल बनाया गया, जिसमें निम्नांकित सदस्य थे

- कृषि–श्री गजेन्द्रसिंह शक्तावत,श्री भूपालसिंह कोठारी
- पशुपालन – डॉ. के. बी. शर्मा
- स्वास्थ्य – डॉ. एन.एम. दुग्गड़, डॉ. बी. भण्डारी
- गृहविज्ञान – श्रीमती विमला कोठारी
- सामान्य विज्ञान – श्री कुन्दन कोठारी

मेरे विभाग के साथियों ने सरकारी नौकरी के कारण मेरे संपादक बनने में कठिनाई जताने से मैंने श्री बृजमोहन जी जावलिया को संपादक बनाया, जो उस समय राजस्थान विश्वविद्यालय के जियोलॉजी विभाग में कार्यरत थे और उन्हें हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था। बैठक में निर्णय किये कि पहले अंक के लिए किन–किन के लेख होंगे। लेख लेने के लिए सम्पादक मंडल ने लक्षित लेखकों को निवेदन किया – लगभग सभी ने स्वीकृति दे दी पर लेख धीरे–धीरे मिले तथा अधिकतर अंग्रेजी में मिले जिनका हमने अनुवाद किया और संबंधित लेखकों से चैक करवाये। लेख सामग्री लगभग जून तक तैयार हो गई।

कुछ अन्तराल के बाद सरस्वती प्रेस से संपर्क किया – दरें, साइज, कागज आदि तय किए। विज्ञापन के लिए अभियान में मैं तथा डॉ. के. बी. शर्मा निकले तथा उस वक्त के 'पोलेट्री' मैनेजर श्री शौकत अली जी साथ हुए। शौकत अली जी का व्यापारियों पर अच्छा प्रभाव था। वे एक ईमानदार, कर्मठ व्यक्ति थे और पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत अच्छी थी। पहला पूरा पृष्ठ का विज्ञापन बोहरा इण्डस्ट्रीज का मिला, जिसे कवर के अंतिम पृष्ठ पर दिया। जितने भी विज्ञापन मिले, उन सबका पैसा पत्रिका छपने के बाद मिला।

सरस्वती प्रेस ने कार्य प्रारम्भ करने के लिए 100रू. एडवान्स मांगे। यह वह समय था जब हम लोगों का वेतन 200 रु. से कम था। अतः 100

रु. मैं अपनी सासुमां श्रीमती पदम कंवर खमेसरा से लेकर आया। पहला अंक 15 अगस्त, 1960 को छपकर तैयार हो गया। उसकी प्रथम प्रति लेकर मैं और के.बी. शर्मा तत्कालीन कलेक्टर श्री जी.बी.के. हूजा से मिले। अंक देखकर उन्होंने बहुत प्रोत्साहित किया और बाधाओं के बावजूद कार्य करते रहने की प्रेरणा दी। पहला अंक कुछ संस्थाओं, पंचायत समितियों, विज्ञापनदाताओं तथा उदयपुर के प्रमुख अधिकारियों को भेजा गया। प्रथम अंक जिस किसी के पास गया, उसने पत्रिका को काफी सराहा।

दूसरे अंक की तैयारी उसी प्रकार हुई। एक–एक अंक की तैयारी में बहुत परिश्रम होता था। अंक का प्लानिंग करना, लेख प्राप्त करना, अनुवाद करना, चार–चार बार प्रूफ पढ़ना, विज्ञापन के लिए दुकान–दुकान पर जाना, पत्रिका को डिस्पेच करना, विशेष व्यक्तियों को देने जाना, लेखे रखना, विज्ञापनदाताओं से पेमेन्ट लाना आदि।

उपरोक्त कार्यों में सहयोगी –

1. अंक प्लानिंग एवं लेख प्राप्त करना – सम्पादक मंडल
2. प्रूफ पढ़ना – मैं स्वयं, मेरी पत्नी, डॉ. के. बी. शर्मा, जावलिया जी
3. विज्ञापन व पेमेन्ट लाना – मैं स्वयं, डॉ. के. बी. शर्मा, शौकत अली जी
4. डिस्पेच – मैं, मेरी पत्नी, डॉ. के. बी. शर्मा, मेरा भतीजा यशवन्त और मेरी बहिन संतोष।

मुख्य रूप से पूरा समन्वय और उत्तरदायित्व मुझ पर ही था और डॉ. के.बी. शर्मा ने मेरा पूरा साथ दिया और यह स्थिति आज तक बनी रही।

श्री पी.पी. सिंघल ने पेस्टीसाइड इंडिया के नाम से कंपनी बनाई, जिसमें पेस्टीसाइड्स बनाने की योजना थी, इनको ब्रान्ड नाम दिया था 'वेजफ्रू'। यह कम्पनी लगभग उसी समय बनी जिस समय लोकविज्ञान ने जन्म लिया। सिंघल को लोकविज्ञान की प्रथम अंक की प्रति बताई और सहयोग मांगा। उन्होंने दूसरे ही अंक से विज्ञापन देना प्रारम्भ किया जो लोकविज्ञान के आखिरी अंक (जून 1981) तक चला।

ykd foKku dk lQj %

नवम्बर, 1960 में दूसरा अंक प्रकाशित हुआ। फरवरी, 1961 में तीसरा और मई, 1961 में चौथा। इस प्रकार एक वर्ष पूरा हुआ। पत्रिका को बराबर सराहना मिलती रही। वही हमारे उत्साह को बनाये रखने का आधार बना। दूसरे वर्ष में भी पत्रिका चलती रही। वर्ष 1961 में विज्ञापन के अलावा लोकविज्ञान का शुल्क भी आना प्रारम्भ हुआ।

साहित्य अकादमी ने हमें पत्र भेजकर सुझाव दिया कि हम भारत सरकार के शिक्षा विभाग को पत्रिका के लिए ग्रान्ट इन एड का प्रार्थना पत्र राज्य सरकार के माध्यम से भेजें। हमने प्रार्थना पत्र तैयार कर साहित्य अकादमी के माध्यम से राज्य सरकार को भेजा। वहां से भारत सरकार को गया। भारत सरकार के शिक्षा विभाग से 5000रू. की ग्रान्ट इन एड की प्रथम स्वीकृति आई जिसने हमें अपार प्रसन्नता दी साथ ही एक 'बुस्ट' भी मिला। मैं और के.बी. दिल्ली गए और आवश्यक कार्यवाही की। 5000 रु. का ड्राफ्ट (वर्तमान मूल्य : कम से कम 10 लाख) प्राप्त कर हमने निम्नांकित निर्णय लिए :–

1. पत्रिका का प्रकाशन मासिक किया जाए।
2. पत्रिका राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ प्रेस जयपुर

प्रिन्टर्स पर छपाई जाए।

3. पत्रिका का वार्षिक शुल्क 6 रु. ही रखा जाए।
4. विज्ञापन की दरें बढ़ाई जाए।
5. राज्य सरकार को पत्रिका में सरकारी विज्ञापन के लिए स्वीकृति का प्रार्थना पत्र भेजा जाए।
6. डॉ. सुशील सक्सेना ने मासिक पत्रिका के कवर की डिजाइन बनाई।

दिनांक 12 जुलाई, 1962 को राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय का उद्घाटन समारोह हुआ (देश का दूसरा कृषि विश्वविद्यालय) जिसमें राज्यपाल डॉ. संपूर्णानन्द मुख्य अतिथि थे। मुख्यमंत्री सुखाड़िया जी एवं कृषि मंत्री नाथूरामजी मिर्घा भी थे। इसके प्रथम कुलपति श्री जी.बी.के. हूजा, आई.ए.एस. को बनाया। हूजा सा. ने समिति को पत्र लिखकर लोकविज्ञान को विश्वविद्यालय का अंग बनाने का आह्वान किया जिससे बजट, स्थान दोनों समस्याएं हल हो सकें। इस सम्मान के लिए हूजा सा. का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें समझाया कि स्वैच्छिकता की भावना को बनाये रखने के लिए इसका अलग ही संचालन उचित होगा। उन्होंने इस सोच की सराहना की।

वर्ष 1963 में त्रैमासिक पत्रिका को तीन वर्ष हो गए। इस वक्त तक इतना परिश्रम हो चुका था कि साधारणतया यही कार्य रुक जाता किन्तु ईश्वर की इच्छा से हमारे उत्साह में कमी नहीं आई और छोटी–मोटी समस्याओं के बावजूद भी कार्य चलता रहा। मासिक पत्रिका का पहला अंक 1964 में आया। बहुत अच्छा प्रिन्ट था जिससे उत्साह और बढ़ा। पत्रिका बराबर चलती रही। 1965 से 1967 तक मेरी पीएच.डी. के कार्य में विशेष व्यस्तता रही। 1963 में बी.एससी. (एग्रीकल्चर) करने के बाद यशवन्त ने अपना 'राजस्थान एग्रीकल्चर डिपो' नाम से व्यवसाय प्रारम्भ किया। 1964 में मेरे बहनोई श्री सुरेश मेहता, एम.एस.सी. (गणित), कृषि महाविद्यालय, उदयपुर में गणित के प्राध्यापक के रूप में आ गए और संपादक का कार्य उन्होंने संभाला और जब तक लोकविज्ञान निकलता रहा, उन्होंने यह उत्तरदायित्व पूर्ण उत्साह एवं योग्यता से संभाला।

वर्ष 1963 में पत्रिका का कार्यालय यशवन्त के एग्रीकल्चर डिपो के साथ रहा। के.बी. के वापस उदयपुर स्थानान्तरण के बाद कार्यालय उसके निवास (पशुपालन चिकित्सालय) पर व्यवस्थित रूप से 1981 तक सक्रिय रूप से चलता रहा।

पत्रिका मासिक होने से पोस्टल कन्सेशन प्राप्त हो गया और केवल 2 पैसे में पत्रिका डिस्पेच हो जाती थी। सहयोग के लिए कार्यकर्ता लगाये जो रात में कार्य करते थे। श्री सुरेन्द्र भटनागर, श्री श्याम भटनागर, श्री द्वारका भटनागर। कुछ समय तक श्री देव कोठारी भी पत्रिका के संपादन कार्य से जुड़े। श्री मोहनलाल शर्मा प्रूफ रिडिंग कार्य के लिए जुड़े जो मेहता सा. से बराबर संपर्क में रहते थे।

वर्ष 1968 में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें हीरालाल जी देवपुरा (मंत्री, राजस्थान सरकार) मुख्य अतिथि थे। पत्रिका की उनको पूरी जानकारी मिली। अतः राज्य सरकार से सरकारी विज्ञापनों के लिए स्वीकृति हो गयी और लगातार विज्ञापन आने लगे। मेरा पीएच.डी. कार्य 1967 में पूरा हो गया और 20 जनवरी, 1968 को डिग्री अवार्ड हो गई। इसी समय स्कूटर भी खरीद लिया। अब दोनों कारणों से समिति के कार्यों में पूरा समय मिलने लगा। श्री एन.एस. भट्ट के मौलिक चित्र पत्रिका के कवर पर आने लगे।

युग प्रणेता वैज्ञानिक के नाम से सीरिज छपने लगी। आपके बच्चे का वैज्ञानिक विकास भी सीरिज के रूप में छपा। कुछ विशेषांक छपे : पोल्ट्री, मक्का, मां, अकाल, जल आदि पर सीरिज में लेख छपे। पत्रिका की उपयोगिता, निरन्तरता एवं सदस्यों की स्वैच्छिक भावना ने चारों ओर अच्छा वातावरण बनाया।

एक–एक कर सभी हिन्दी भाषी राज्यों में पत्रिका को शिक्षा विभाग की ओर से मान्यता प्राप्त हुई। 1968 में अनिल बोर्दिया सा. शिक्षा विभाग के निदेशक थे। उन्होंने पत्रिका की प्रतियां सभी सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी विद्यालयों को निरन्तर भेजने का आदेश दिया जिससे पत्रिका को काफी बड़ा सहयोग रहा।

वर्ष 1968 में ही सीएसआईआर ने लोकप्रिय वैज्ञानिक पत्रिकाओं के प्रतिनिधियों की कार्यशाला आयोजित की। उसमें भाग लेने का मुझे अवसर मिला। उस समय डॉ. आत्माराम सीएसआईआर के महानिदेशक थे। उन्होंने काफी प्रोत्साहित किया। विज्ञान एकेडमी के अध्यक्ष आदरणीय डॉ. डी.एस. कोठारी थे, उन्होंने भी ऐसी कार्यशाला आयोजित की, उसमें भी जाने का अवसर मिला। उस समय तक पत्रिका को लगभग 8 वर्ष हो चुके थे। मैं पत्रिका के कुछ अंक लेकर गया था। 'साइन्स टू डे' इसी वर्ष प्रारम्भ हुआ था। उसके संपादक श्री झा को मैंने लोकविज्ञान की प्रतियां दिखाई। वह अत्यन्त प्रसन्न हुए और कहा कि मैं यह कामना करता हूं कि यह पत्रिका देश की सभी भाषाओं में छपे और लगभग 20 लाख प्रतियां छपे, पर यह कार्य दिल्ली से संचालन करने से हो सकेगा। 1971 में यू.आई.टी. से प्लाट खरीदा। मार्च, 1971 में मैंने राष्ट्रीय मक्का वर्कशॉप में प्रमुख कार्यकर्त्ता के रूप में कार्य किया। छोटे पत्र–पत्रिकाओं के संगठन ने भी दिल्ली में बैठक आयोजित की और एक भेंट तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिराजी के साथ करवाई।

वर्श 1972 में चार महत्वपूर्ण घटनाएं हुई –

1. श्री प्रकाश आतुर के उदयपुर से विधायक के लिए कांग्रेस प्रत्याशी घोषित होने पर फरवरी, मार्च में कांग्रेस सदस्य के रूप में सक्रिय रूप से सहयोग किया।
2. मेरे पिताश्री के अधिक बीमार हो जाने से उन्हें हॉस्पीटल में भर्ती कराया। डॉ. बोर्दिया और डॉ. शूरवीर सिंह जी के निर्देशन में चिकित्सा चल रही थी पर 8 दिन चिकित्सालय में रहने के बाद उनका 12 मार्च को स्वर्गवास हो गया।
3. मेरे ज्येष्ठ पुत्र पवन का जन्म 5 जुलाई को हुआ।
4. मेरा उदयपुर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा का अक्टूबर में अध्यक्ष चुना जाना। यह पद 1981 तक बराबर चलता रहा।

इन सभी परिस्थितियों का कुछ प्रभाव लोकविज्ञान के कार्यों पर पड़ा।

माह मई, 1973 के अंत में विश्वविद्यालय के आदेश से मेरा स्थानान्तरण किया गया। मैंने उसे नहीं स्वीकारा और विवाद शुरू हुआ जो मार्च, 1979 में समाप्त हुआ। इस काल में मानसिक और आर्थिक कठिनाइयां रही। 1974 में फिकूसा एनटरप्राइजेज की स्थापना की।

15 मार्च, 1979 से पुनः विश्वविद्यालय का कार्य प्रारम्भ हो जाने से अगले दो वर्ष काफी व्यस्तता के रहे। विश्वविद्यालय कार्य, लोक विज्ञान का कार्य, तेरापंथ समाज का कार्य, फिकुसा इन्टरप्राईजेज की देखरेख।

लोक विज्ञान के विभिन्न वर्षों में प्रकाशित कतिपय अंक

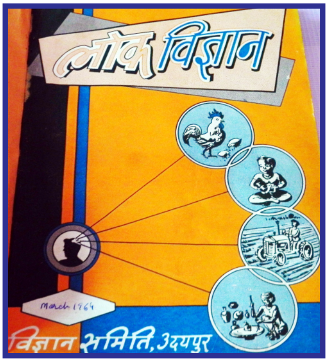

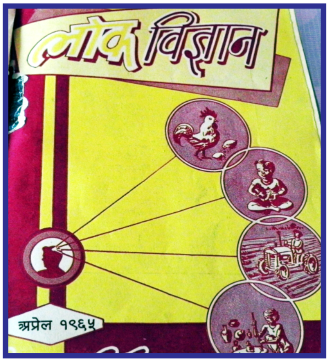

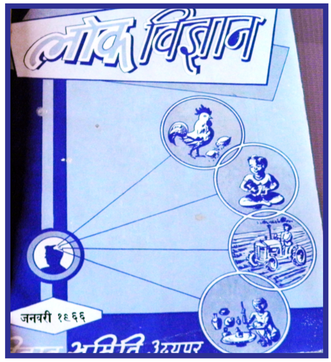

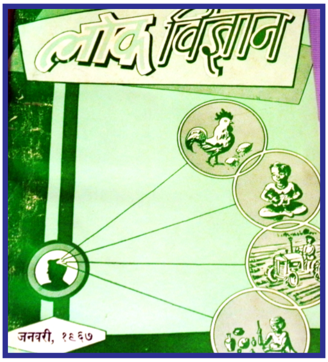

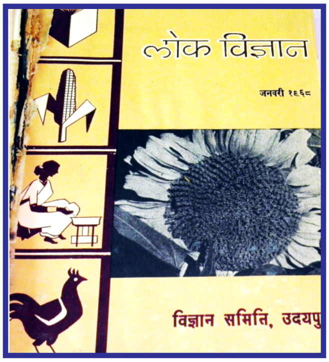

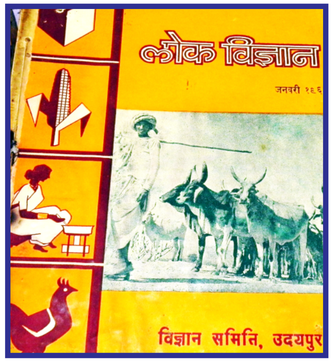

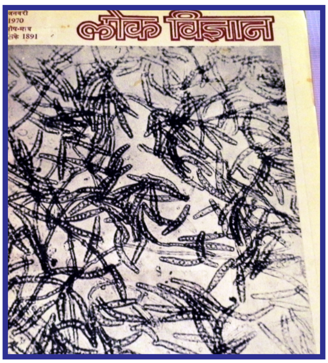

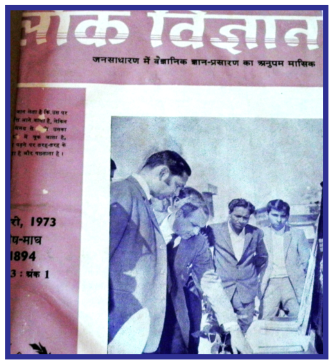

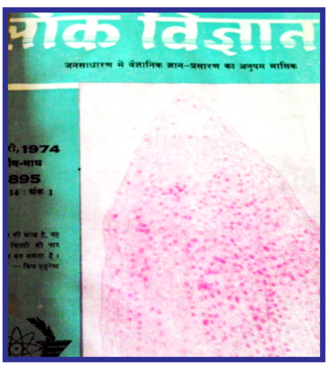

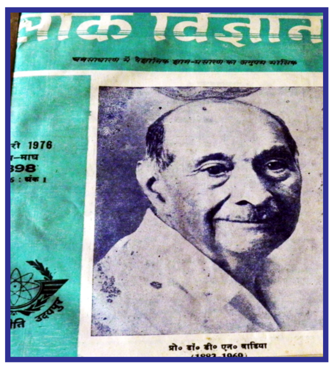

ykd foKku dk LFkxu%

जून, 1981 के बाद लोकविज्ञान का प्रकाशन रूक गया। कारण थे – (1) कार्यालय के लिए उपयुक्त भवन का अभाव। (2) सीएसआईआर से प्राप्त अनुदान की अवधि पूर्ण होना। (3) पारिवारिक दायित्वों की प्राथमिकता।

समिति के वर्तमान प्रांगण में जब कार्यालय भवन बना और उसमें दिसम्बर 1986 में प्रवेश किया तो राय मिली कि पत्रिका फेज से अब प्रेक्टिकल फेज में उतरा जाय। गांवों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रचार–प्रसार किया जाय तथा उन्हें अपनाने पर जोर दिया जाय। ऐसा निर्णय हो जाने से लोकविज्ञान का कार्य पुनः चालू नहीं हो सका। यह अत्यन्त संतोष की बात है कि लोकविज्ञान का प्रकाशन बंद होने के 25 वर्ष बाद तक भी उसकी मांग आती रही। समिति के कई सदस्यों की भी हार्दिक इच्छा थी कि लोकविज्ञान पुनः प्रकाशित किया जाय। ऐसा करने के लिए युवाशक्ति और धनराशि की आवश्यकता थी। यह जुटा पाना संभव न हो सका। एक समन्वय किया गया। सदस्यों और सहयोगियों के लिए एक चार पृष्ठ की पत्रिका 'लोकविज्ञान' 2007 से प्रकाशित करना प्रारम्भ किया जो निरन्तर गतिशील है।

foKku lfefr dk Hkkfrd mUu;u%

किसी भी संस्था के विकास का मापदण्ड उसके उद्देश्यों की अधिकाधिक पूर्ति में निहित है तथापि हम संस्था के भौतिक उन्नयन को भी साथ–साथ अत्यावश्यक मानते हैं। स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में केलवा ठाकुर सा. की बैठक, बाद में अनेक वर्षों तक मेरा निवास स्थान और डॉ. के. बी. शर्मा का आवास ही विज्ञान समिति के कार्यालय रहे।

सन् 1971 में नगर परिषद, उदयपुर ने विज्ञान समिति को अशोक नगर में 20 हजार वर्गफीट का एक भूखण्ड रियायती दर पर दिया जिसका श्रेय तत्कालीन चेयरमेन गिरधारीलाल शर्मा एवं तत्कालीन सचिव मेरे मित्र श्री एल.एन. शाह को जाता है।

उक्त आवंटित भूखण्ड पर मई 1975 में देश के पूज्य वैज्ञानिक पद्म विभूषण डॉ. डी.एस. कोठारी की अगुवाई में भवन का शिलान्यास हुआ। तत्कालीन सिंचाई मंत्री हीरालाल जी

देवपुरा, मंत्री श्री गुलाबसिंह शक्तावत, प्रमुख उद्योगपति श्री पी.पी. सिंघल, तत्कालीन कलक्टर श्री पी.एन. भण्डारी की उपस्थिति महत्वपूर्ण थी। भवन का नक्शा लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता श्री चंद्रकांत कोठारी एवं कनिष्ठ अभियन्ता अब्दुल माजिद ने बनाया। एक हॉल, एक कमरा व एक टॉयलेट का खाका बना कुल 1000 वर्गफीट पर कार्य शुरू हुआ। छत के लिए लोहा और सीमेन्ट बजाज जी ने दिया। छोटा–छोटा आर्थिक सहयोग प्राप्त कर निर्माण कार्य को गति प्रदान की। भूखण्ड की चारदीवारी बनवाई।

26 दिसम्बर, 1986 को तत्कालीन कमिश्नर श्रीमान् एम.एल. मेहता सा. की अगुवाई में कार्यालय भवन में प्रवेश किया। मेहता सा. ने राय दी कि लोकविज्ञान को पुनः चालू करने के बजाय समिति को विज्ञान और प्रौद्योगिकी को गांवों में ले जाना चाहिए। एक किसी गांव का सर्वे कर कार्य शुरू करना चाहिये। हमने यह प्रस्ताव स्वीकार किया।

इस प्रकार विज्ञान समिति की रजत जयन्ती विकास यात्रा एक निश्चित गति–मति और युति से गतिमान रही।

विज्ञान समिति के सम्पोषक

विशिष्ट संरक्षक सदस्यः श्री मांगीलाल लूणावत, श्री बी.एच. बाफना, सिंघल फाउण्डेशन, श्री पद्म बिनानी–बिनानी फाउण्डेशन, श्री दाऊद अली दाऊद – पिकोक इण्डस्ट्रीज, श्री पी.एल. रूंगटा, श्री लक्ष्मण सिंह कर्णावट, डॉ. के.एल. कोठारी , इंजी. अरूण कोठारी, श्री केसरीमल चण्डालिया, इंजी आर.के. चतुर, श्री किरणमल सावनसुखा, रतनलाल कंवरलाल पाटनी चेरिटीज, श्री माणिक चंद नाहर, श्री् अखिलेश जोशी, डॉ. यशवन्त सिंह कोठारी

संरक्षक सदस्यः श्री भंवरलाल डागलिया, श्री गणेश डागलिया, श्री हेमन्त बोहरा, श्री राज लोढ़ा, श्रीमती विमला कोठारी, श्री पवन कोठारी, श्री संदीप बाफना, श्री बाबूलाल कोठारी, श्री प्रदीप बाफना, श्री प्रफुल्ल सुराना, डॉ. अनिल कोठारी, श्री प्रताप सिंह तलेसरा, श्री महेन्द्र टाया, श्री भीमनदास तलरेजा, डॉ. एल.एल. धाकड़, डॉ. जी.सी. लोढ़ा, डॉ. आई.एल. जैन, श्री सुशील कुमार बांठिया, श्री गंभीरसिंह मेहता, श्री राजेन्द्र बया, डॉ. ओमप्रकाश चपलोत, डॉ. औंकारसिंह राठौड, श्री जगदीश नारायण कविराज, डॉ. के.बी. शर्मा, इंजि. एच.वी. पालीवाल , डॉ.एन.एल. गुप्ता, डॉ. के.एल. तोतावत

हमारे प्रेरणा स्रोत : स्व. श्री फूलचंद कोठारी, स्व. इंजि ललित बिहारी बक्षी, स्व. श्री हुकमराज मेहता, स्व. रोशन एफ. हिंगड़, स्व. श्री हरनाथ सिंह मोदी

प्रवासी मानद सदस्यः प्रो. तेज भटनागर, (फ्रांस), प्रो.तेजसिंह धाकड़, (यू.एस.ए.), प्रो. जगमोहन हुमड़, (कनाड़ा), डॉ. कीर्ति जैन (यू.एस.ए.)

विज्ञान समिति की विकास यात्रा
स्वर्ण जयंती काल

डॉ. के. बी. शर्मा

सन् 1959 में केलवा ग्राम में स्थापना के बाद से 1986 में उदयपुर में स्वयं के भवन में संचालित होने तक की विज्ञान समिति की विकास यात्रा में 'लोक विज्ञान' मासिक का प्रकाशन अन्य अनेक नवीन गतिविधियां एवं सेवा समर्पित व्यक्तियों का समिति से जुड़ाव, यह रजत वर्षों का संक्षिप्त सार है। इस सुदृढ़ नींव पर निर्मित विज्ञान समिति अपने स्वर्ण जयन्ती वर्ष की ओर अग्रसर हुई, अनेक आशाओं, सपना और योजनाओं को लेकर।

महिला सशक्तिकरण –

इडारा : राज्य सरकार ने महिला विकास की उदयपुर जिला इकाई 'इडारा' का कार्य विज्ञान समिति को

महिला विकास कार्यक्रम
उदयपुर

मंजरी भान्ती
परियोजना निदेशक
जिला महिला विकास अभिकरण
उदयपुर

हँसा कृष्णावत
इडारा विशेषज्ञ
जिला इडारा
विज्ञान समिति, उदयपुर

महिला एवं बाल विकास विभाग, राजस्थान

दिया। इस योजना में चार कार्यकर्त्ता (इडारा विशेषज्ञ, कार्यक्रम सहायक, लिपिक, सहयोगी) का बजट था। इस इकाई को जिले की महिला विकास की मूल इकाई महिला विकास अभिकरण के लिए संदर्भ संस्था के रूप में कार्य करना था। अभिकरण में एक प्रोजेक्ट डायरेक्टर, 8 प्रचेताएं (जिले के आठ क्षेत्रों में) व 80 साथिनें 80 गांवों में थी।

विज्ञान समिति में इडारा का कार्य करने की उर्वरा भूमि मिली। फलस्वरूप उल्लेखनीय कार्य हुए और विज्ञान समिति इडारा की तीन विशेषज्ञ महिलाएं (श्रीमती कमलेश यादव, सुश्री डॉ. गीता मोहन तथा श्रीमती उषा राव) प्रोजेक्ट डायरेक्टर बनी। यह कार्यक्रम 13 वर्ष (मार्च 2000) तक चला।

अप्रेल, 1987 में श्रीमती कमलेश यादव सरकार द्वारा ही विशेषज्ञ नियुक्त कर दी गई। कार्यक्रम सहायक का चयन समिति द्वारा किया गया। जिस पर आशा वर्मा (अजमेर) का चयन हुआ। अन्य कार्यकर्ता भी नियुक्त किए गए। अच्छे ढंग से इडारा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। समिति की बहुसंकाय सदस्यता, उनके

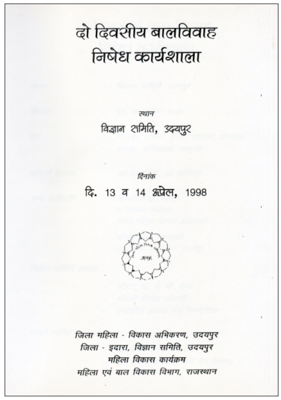

दो दिवसीय बालविवाह
निषेध कार्यशाला

स्थान
विज्ञान समिति, उदयपुर

दिनांक
दि. 13 व 14 अप्रेल, 1998

जिला महिला - विकास अभिकरण, उदयपुर
जिला - इदारा, विज्ञान समिति, उदयपुर
महिला विकास कार्यक्रम
महिला एवं बाल विकास विभाग, राजस्थान

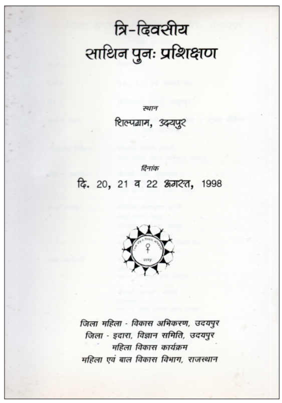

त्रि-दिवसीय
साथिन पुनः प्रशिक्षण

स्थान
शिल्पग्राम, उदयपुर

दिनांक
दि. 20, 21 व 22 अगस्त, 1998

जिला महिला - विकास अभिकरण, उदयपुर
जिला - इदारा, विज्ञान समिति, उदयपुर
महिला विकास कार्यक्रम
महिला एवं बाल विकास विभाग, राजस्थान

अनुभव और स्रोतों की पृष्ठभूमि में इडारा को संपूर्ण

मार्गदर्शन मिला और वांछित गतिविधियां पूरे उत्साह के साथ आयोजित होती रही। प्रमुख गतिविधियां निम्नानुसार रही –

1. प्रचेताओं का समय–समय पर प्रशिक्षण
2. प्रचेताओं का समय–समय पर जिला अधिकारियों से आमुखीकरण
3. साथिनों का प्रशिक्षण / पुनः प्रशिक्षण
4. प्रचेता द्वारा क्षेत्रों में 'जाजम' बैठकें
5. मासिक पत्र 'साथिन रो कागद'
6. अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर कार्यक्रम
7. समसामयिक विषयों पर विशेष कार्यक्रम
8. राज्य स्तरीय बैठकों में भागीदारी
9. राज्य अथवा जिले में निर्धारित विशेष कार्यक्रम – बाल विवाह रोकने के लिए जागरूकता, समसामयिक टीकाकरण के लिए प्रेरणा, विशेष समस्याओं पर निर्धारित कार्यक्रम आदि।
10. प्रशिक्षणार्थियों के ठहरने व खाने का प्रबन्ध

यह हर्ष का विषय है कि वृहद् उदयपुर जिले (उदयपुर व राजसमन्द मिलाकर) की आठ प्रचेताएं और सुदूर गांवों में अधिकतर अनपढ़ 80 साथिनें, वे सब समिति में प्रशिक्षण हेतु पहुंच जाती थी। (भीम, धरियावाद, कोटड़ा, खेरवाड़ा की दूरी से) समिति का सभाकक्ष दिन में प्रशिक्षण हॉल तथा रात में हॉस्टल बन जाता था। जहां सभी साथिनें सो जाती थी। सवेरे नदी की ओर शौच आदि के लिए चली जाती थी। बार–बार प्रशिक्षण में आकर महिलाएं (साथिनें एवं प्रचेताएं) समिति से बहुत हिलमिल गई थी। उनको हर बार कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, गृहविज्ञान का नवीन ज्ञान भी विशेषज्ञों द्वारा कराया जाता था। इन सभी बातों का जिले की ग्रामीण महिलाओं पर काफी प्रभाव पड़ा और महिला जागृति का आंदोलन बना। कमलेश यादव लगभग 3 वर्ष कार्यरत रही और परियोजना निदेशक बनकर गई। दूसरी विशेषज्ञ डॉ. गीता मोहन थी वह भी लगभग एक वर्ष रही और परियोजना निदेशक बन कर गई। तीसरी इडारा विशेषज्ञ श्रीमती उषा राव आई जिसका चयन 1993 में हुआ। उसने भी पूरे उत्साह के साथ कार्य किया। डॉ. कोठारी की सेवानिवृत्ति के बाद, संस्था में उनकी पूर्णकालीन उपस्थिति से उसे बड़ा संबल मिला और कई अच्छे कार्यक्रम आयोजित हुए। वह भी सितम्बर, 1997 में परियोजना निदेशक पदासीन हुई।

इडारा मार्च, 2000 तक चलता रहा। प्रारम्भिक काल 1985 में 7 जिलों में प्रारम्भ हुई योजना राजस्थान के सभी जिलों में पहुंच गई। किन्तु बाद में सरकार ने कई योजनाएं धन के अभाव में बंद कर दी। उसमें इडारा भी बंद हो गई। विज्ञान समिति में इडारा योजना 13 वर्ष तक चली। परियोजना निदेशक श्रीमती कौशल्या भाटिया की प्रतिनियुक्ति के काल की समाप्ति के बाद श्रीमती मंजरी भांति उदयपुर महिला विकास अभिकरण की परियोजना निदेशक बनी। मार्च, 2000 तक इडारा विज्ञान समिति के पास था मंजरी जी से अच्छे संबंध रहे और पूर्ण सहयोग मिला।

इडारा के कार्यक्रमों में यह विशेषता थी कि सारी बैठकें जाजम पर ही होती थी। अधिकारीगण, विशेषज्ञ तथा अतिथि सभी एक ही स्तर पर दरी पर ही बैठते थे।

तुम्हारा अहसास, मेरा विश्वास
हम सब मिले, सजी इक आस
जिला महिला विकास अभिकरण, उदयपुर
जिला इदारा, विज्ञान समिति, उदयपुर
DWCRA
हमने हाथों में संजोली, अपनी शक्ति अपने साथ
अब बढ़ें आगे ही आगे, सभी मिलकर एक साथ

इडारा और अभिकरण के साथ समिति ने कई विशेष कार्यक्रम आयोजित किए थे –

1. त्रि–दिवसीय महिला व्यवसाय कार्यशालाएँ
2. मशरूम मेले
3. विज्ञान दिवस (वार्षिक) 28 फरवरी
4. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (वार्षिक) 8 मार्च

मशरूम कार्य :

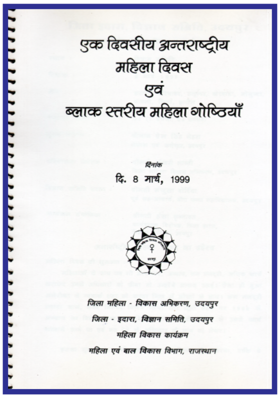

विश्वविद्यालय सेवा से मेरे निवृत्त होने के बाद जब 9 जनवरी, 1995 से मैंने विज्ञान समिति में नियमित सेवाएं देना प्रारम्भ किया तो बराबर चिंतन चला कि क्या नये कार्यक्रम जोड़े जाए। उस समय इडारा का कार्यक्रम पिछले 8 वर्ष से चल रहा था। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने सलाह दी कि चूंकि मशरूम मेरे विभाग (प्लान्ट पेथोलोजी) का कार्य रहा है, उसके प्रचार–प्रसार का कार्य हाथ में लिया जाय। इस पर विचार हुआ और निम्नांकित कारणों से इसे लेना स्वीकार किया –

1. मशरूम बहुत उपयोगी, पौष्टिक एवं औषधीय जैविक पदार्थ है।
2. मेरे विभाग में किए अनुसंधानों से पता चला कि दो मशरूमों को हमारे क्षेत्र में उगाया जा सकता है।
3. एकविद्यार्थी ने मेरे निर्देशन में मशरूम पर पी. एच.डी. की।
4. किसान मामूली विनियोग पर मशरूम उगा सकते हैं।
5. विभाग में मशरूम अनुसंधान प्रभारी डॉ. अनिला दोशी ने समिति का सदस्य होना और इस प्रोजेक्ट में सहयोग करना स्वीकार किया।

डॉ. दोशी की राय से प्रस्ताव तैयार किया गया। इस प्रस्ताव में ढींगरी मशरूम को यह

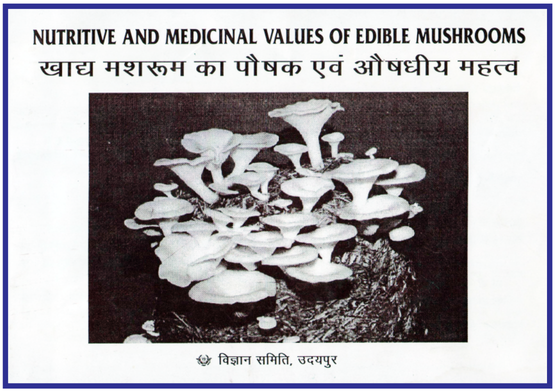

सोचकर रखा कि किसान इसे आसानी से उगा सकेंगे तथा वर्ष के अधिकांश समय में यह उगाया जा सकेगा। प्रस्ताव में दस गावों के 10–10 कृषकों (पुरुष अथवा महिला) को 6–6 दिन के प्रशिक्षण देने का मुख्य कार्यक्रम था। मशरूम को लोकप्रिय करने का दूसरा बिन्दु था। प्रस्ताव में आवश्यक

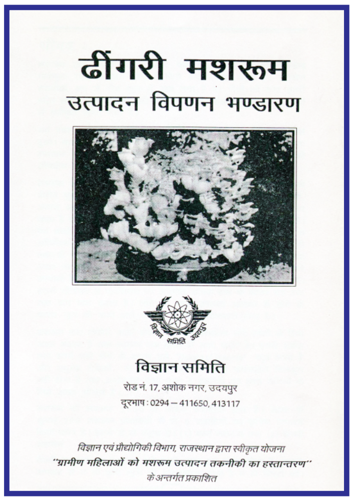

उपकरण खरीदने का तथा दो कार्यकर्त्ता नियुक्त करने का प्रावधान रखा था। प्रस्ताव 3 वर्ष के लिए 1996 (राज्य आयोजना 1996–97) में स्वीकृत हुआ। जिन 30 गांवों के किसानों को प्रशिक्षण दिया गया वे इस प्रकार है :–

फेज–प्रथम : फतहनगर, सनवाड़, चन्देसरा, गुड़ली, मावली, खेमली, सांगवा, घासा, बिजनवास। कुल लाभार्थी 175 महिलाएँ।

फेस–द्वितीय : पंचायत समिति मावली के गांव नउवा, डबोक, मेड़ता, नाहरमगरा, नान्दवेल, रख्यावल, वीरधोलिया तथा पंचायत समिति गिर्वा के गांव भैंसड़ा कला, देबारी, पुरोहितों की मादड़ी।

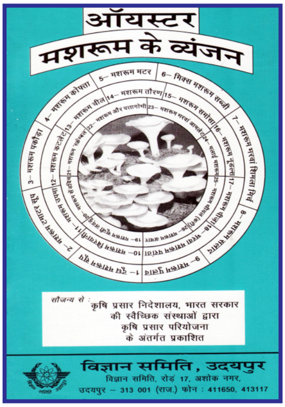

कुल लाभान्वित 257 महिलाएँ।

फेस–तृतीय : गांव ओड़वाड़िया, देवाली, घाणोली, गंदोली (पंचायत समिति मावली), शोभागपुरा, ढ़ीकली, मेहरों का गुड़ा (पंचायत समिति बड़गांव), करणपुर पंचायत समिति वल्लभनगर तथा भोईयों की पंचोली (पंचायत समिति गिर्वा)।

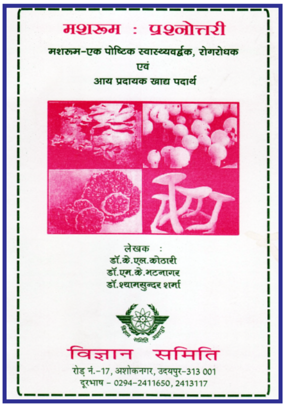

प्रशिक्षक डॉ. अनिला दोशी व उनके सहयोगियों द्वारा दिया गया एवं मशरूम स्पान भी उन्होंने समूल्य प्रदान किया। एक पूरा कमरा मशरूमघर बनाया गया। निम्नांकित तकनीकी कार्यकर्त्ता इस कार्य में नियुक्त हुए।तीन व्यक्तिओं की तकनीकी समिति बनाई गई जिसमें डॉ.के.एल. कोठारी, डॉ. एम.के. भटनागर व डॉ. पी.डी. गेमावत ने देखरेख की थी। प्रचार–प्रसार के लिए निम्नांकित गतिविधियां आयोजित की गई :–

1. हिन्दी और अंग्रेजी में पेम्पलेट्स प्रसारित किये गये।
2. मशरूम उत्पादन प्रक्रिया पर पुस्तिका का मुद्रण।
3. मशरूम व्यंजनों पर पुस्तिका।
4. मशरूम के पौष्टिक और औषधीय गुणों पर विशेषज्ञों के लेखों (हिन्दी और अंग्रेजी में) की एक पुस्तिका छपाई।
5. मशरूम क्या है? – पर एक प्रश्नोत्तर पुस्तिका तैयार की और छपाई।
6. मशरूम पर एक सुन्दर पोस्टर बनाया।
7. रोटरी क्लब के मेले में कई वर्षों तक स्टाल लगाया।
8. शिल्पग्राम मेले में व्यंजनों का 10 दिन तक स्टाल लगाया।
9. समिति के प्रांगण में एक विशाल मशरूम मेला आयोजित किया गया।
10. कई क्लबों, संस्थाओं में मशरूम पर वार्ताएं दी।
11. आकाशवाणी के माध्यम से रेडियो पर वार्ताएं दी।
12. समय–समय पर और स्थान–स्थान पर प्रदर्शनियां लगाई गई।

यह अनुभव किया जाने लगा कि स्पान का उत्पादन समिति में ही होना चाहिए तथा कुछ किसानों को अन्य प्रान्तों में मशरूम उत्पादन का कार्य दिखाने ले जाना चाहिए। अतः ट्राइबल कमिश्नर से बात कर एक प्रोजेक्ट उनको प्रेषित किया। उसकी स्वीकृति से मशरूम स्पान लेब स्थापित की जिसका उद्घाटन ट्राइबल कमिश्नर

श्री सलाउद्दीन जी ने 5 जुलाई, 1996 को किया। अन्य प्रान्तों में मशरूम कार्य देखने के लिए मैं, ट्राइबल विभाग का एक अधिकारी श्री दीपांकर चक्रवती तथा ट्राइबल विभाग द्वारा मनोनीत दो किसान पूना, मुम्बई जाकर आए। मशरूम स्पान का उत्पादन समिति में ही होने से प्रशिक्षण में आसानी हो गई। किसानों की भी आवश्यकता की पूर्ति होती गई। बाद में मशरूम कार्य देखने मैं मैसूर, बैंगलोर इण्डियन साइन्स इन्स्टिट्यूट (सीएफटीआरआई) एवं डॉ. तिवारी की मशरूम लेब, मद्रास (डॉ. स्वामीनाथन इन्सटिट्यूट) तथा पाण्डीचेरी भी गया।

मशरूम के कार्य को और अधिक समझने के लिए 23–24 अप्रेल, 1997 में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ट्राईबल रिचर्स इंस्टीट्यूट में किया गया जिसमें 6 राज्यों से अनेक वैज्ञानिक सम्मिलित हुए।

समिति में एक सक्रिय काउन्टर स्थापित किया जिसमें मशरूम और स्पान उपलब्ध कराया जाता रहा। मशरूम में बढ़ते हुए ज्ञान की जानकारी बराबर बनी रहे उसके लिए निम्नांकित कार्य किए–

1. राष्ट्रीय मशरूम अनुसंधान सोसायटी की आजीवन सदस्यता ली जिससे त्रैमासिक पत्रिका आ रही है।
2. राष्ट्रीय मशरूम अनुसंधान केन्द्र की एक संगोष्ठी में भाग लिया।
3. राष्ट्रीय मशरूम कोऑर्डिनेटेड प्रोजेक्ट की उदयपुर में हुई वार्षिक कार्यशाला (29 दिसम्बर, 1997) के वैज्ञानिकों को बुलाया। जिन्होंने सारी जानकारी मिलने के बाद कहा कि मशरूम पर इतना एक्सटेन्शन वर्क तो हम भी नहीं कर पा रहे हैं।
4. मशरूम वैज्ञानिकों की समय–समय पर विजिट, चर्चा तथा वार्ताएं करवायी।
5. पुस्तकें खरीदी।
6. जयपुर एवं पंतनगर में मशरूम केन्द्र देखें।

मशरूम पर ज्ञान प्रसार के लिए विज्ञान समिति ने एक नया प्रयोग किया। 'मशरूम ज्ञान' मासिक निकालना 15 अगस्त, 1998 से प्रारम्भ किया जिसक अनेक अंक निकले। इस मशरूम ज्ञान की चहुंओर बहुत प्रशंसा हुई। मशरूम के दोनों प्रोजेक्ट्स (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा ट्राइबल) मार्च 1999 तक पूरे हो गए। किन्तु मशरूम कार्य कृषि विस्तार योजना के अन्तर्गत चलता रहा। पुनः 2006 में कृषि विभाग राजस्थान ने मशरूम पर एक प्रोजेक्ट स्वीकृत किया जिसके अन्तर्गत भी किसानों को प्रशिक्षण दिया। नई पुस्तकें तैयार कर छपवाई।

मशरूम के विभिन्न कार्यों से क्षेत्र में जो प्रभाव आया, वह इस प्रकार है –

1. जन–साधारण को मशरूम की जानकारी हुई। उसकी उपयोगिता का ज्ञान हुआ।
2. लोगों ने मशरूम खाना प्रारम्भ किया जो मशरूम को पहले जानते थे पर घृणा करते थे उनकी घृणा दूर हुई।
3. विज्ञान समिति को मशरूम के लिए जाना जाने लगा।
4. हजारों किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपने घरों में भी उत्पादन किया।

मशरूम का उत्पादन व्यवसाय क्यों नहीं बन पाया :–

1. मशरूम उत्पादन के लिए ताजे स्पान की आवश्यकता होती है, वह उत्पादन कर्ता के

द्वार पर मिल सके उसका प्रबन्ध होना चाहिये।

2. मशरूम का उत्पादन जितना मशरूम वैज्ञानिक क्लेम करते उतना नहीं हो पाता।
3. गांवों में मशरूम खाने वाले बहुत कम लोग हैं, अतः उसे बेचने के लिए शहर में लाना पड़ता है।
4. मशरूम उत्पादन की कुछ तकनीकी बारीकियां किसान आसानी से नहीं पकड़ पाता।
5. पानी की उपलब्धता कम होने पर मशरूम उत्पादन नहीं किया जा सकता।
6. जितने महिने उत्पादन हो सकने की संभावना वैज्ञानिक करते हैं उतना नहीं हो पाता।
7. कुछ अन्य व्यवहारिक समस्याएँ।

मशरूम व्यवसाय कैसे बन सकता है :–

1. कोई निजी एजेन्सी स्पान उत्पादन व डोर टू डोर वितरण एवं उत्पादित मशरूम को एकत्रित कर उचित दाम पर क्रय कर सकें।
2. गांवों में कोई व्यक्ति मशरूम की थैलियां बनाने का कार्य करें तथा स्पान की गई थैलियां आवश्यकतानुसार लोग ले जाए। इससे हर उत्पादक को स्पान खरीदना, सुरक्षित रखना, ड्रम आदि की व्यवस्था, सुखाने का स्थान, रसायन, थैलियां बनाने का स्थान आदि की आवश्यकता न रहे।

विद्यालयों में मशरूम :–

प्रतिवर्ष विद्यार्थी मशरूम पर प्रोजेक्ट तैयार करते हैं। प्रदर्शनी लगाते हैं। इसके लिए मार्गदर्शन, सामग्री एवं साहित्य के लिए विज्ञान समिति आते हैं।

मशरूम पर विचार–विमर्श :

कई लोग मशरूम की खेती को व्यवसाय बनाने में रूचि रखकर मार्गदर्शन के लिए आते हैं, उनको व्यावहारिक राय एवं साहित्य दिया जाता है।

वर्मी कम्पोस्ट कार्य :

आजकल कार्बनिक खेती का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। यह किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए लाभकारी है। गोबर और कार्बनिक वेस्ट को खाकर केंचुआ जो पदार्थ निकालता है वह सर्वोत्तम खाद है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कृषि प्रसार योजना के अन्तर्गत केंचुआ खाद के प्रचार–प्रसार का कार्य हाथ में लिया। कृषि कॉलेज में इसके विशेषज्ञ डॉ. एस.सी. भण्डारी की विज्ञान समिति में वार्ता करवाई और विस्तृत चर्चा कर विषय को समझा। तदुपरान्त कृषि प्रसार निदेशालय के विशेषज्ञों के साथ बेफ(BAIF) का कार्य देखने झाड़ोल तहसील में बाघपुरा गये। इस विजिट में कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. के.एन.नाग भी थे। कई किसानों के यहां यह कार्य देखा। समिति में एक 'कल्चर सेन्टर' बनाया जिसमें जमीन से 1.5 फीट गहरा 3′ x 2′ के आकार का गड्ढा विशेषज्ञों द्वारा बताये ढंग से उसमें गोबर, अन्य कार्बनिक सामग्री भरी तथा कृषि महाविद्यालय से प्राप्त केंचुए छोड़े। आवश्यक पानी देते रहे, खड्डे को पत्तों आदि से बंद रखा। कुछ समय में केंचुओं की संख्या बढ़ी जो हमारे उत्साह का कारण बना। इस कल्चर सेन्टर का उपयोग प्रशिक्षणों एवं प्रदर्शनों के लिए हुआ।

पेम्पलेट्स, एक पोस्टर एवं एक पुस्तिका तैयार की गई। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक ने गांव गोद योजना के अंतर्गत एक गांव में 10

किसानों को वर्मीकम्पोस्ट का प्रशिक्षण देकर यूनिट तैयार कराने का कार्य दिया उसके लिए 10,000रू. स्वीकृत किए। गिर्वा तहसील के नयागांव में यह कार्य किया जिसके बहुत अच्छे नतीजे मिले। दूसरे वर्ष भी यह कार्य उसी गांव के लिए मिला। प्रथम वर्ष के नतीजों के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए हमने नया गांव में वर्मीकम्पोस्ट दिवस मनाया। उसकी अध्यक्षता हमारे सदस्य श्रीमान् हुकमराज जी मेहता ने की। उन्होंने प्रसन्न होकर इस कार्य को जिले की हर पंचायत में फैलाने के लिए अपनी ओर से आर्थिक सहयोग करने की घोषणा की। इस बाबत् पत्र छपाए गए। पेम्पलेट के साथ हर पंचायत को भेजा। पत्र में लिखा कि विज्ञान समिति पंचायत के लिए प्रशिक्षण एवं विजिट आयोजित कर सकती है। यह आश्चर्य की बात है कि एक भी पंचायत से प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुई।

विज्ञान समिति ने अपने स्तर पर वर्मीकम्पोस्ट को कुछ गांवों में फैलाने का कार्य निम्नांकित कार्यक्रमों के अन्तर्गत किया गया –

1. भारत सरकार की उदयपुर जिले में कृषि प्रसार योजना (2000–01 से 2003–04 तक)
2. कृषि विभाग की गांव गोद योजना
3. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की विशिष्ट योजना
4. श्री हुकमराज मेहता – वर्मीकम्पोस्ट प्रसार योजना
5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की विज्ञान ग्राम योजना

वर्मीकम्पोस्ट का कार्य उदयपुर जिले में नयागांव, पीपलवास, घणोली, टूस डांगियान, उन्दरी, राजसमन्द जिले में रेलमगरा तथा चित्तौड़गढ़ जिले में सापेटिया में किया गया।

वर्मीकम्पोस्ट दिवस :

वर्ष 2003 से 2008 तक नयागांव, उन्दरी, बुझड़ा, बेदला में वर्मीकम्पोस्ट दिवस मनाया गया। इन सभी स्थानों पर विभिन्न गांवों से किसानों को बुलाया गया। वहां वर्मीकम्पोस्ट के कार्य दिखाये गये। कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, विज्ञान समिति, कृषि विज्ञान केन्द्र, बाइफ आदि संस्थाओं के मिले–जुले प्रयासों से कई गांवों में कार्य फैला। कई जगह बड़ी–बड़ी इकाइयां बनी। समिति सदस्यों ने कृषि महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्बनिक खेती की संगोष्ठी में भी भाग लिया।

विज्ञान समिति ने एक दिवसीय संगोष्ठी का समिति में आयोजन किया और एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें उदयपुर जिले के वर्मीकम्पोस्टिंग के संपूर्ण कार्य का विवरण दिया गया है।

वर्मीकम्पोस्ट का प्रचार–प्रसार :–

किसानों में वर्मीकम्पोस्टिंग विधि के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ समिति ने शहर के उपभोक्ताओं में भी वर्मीकम्पोस्ट का प्रचार–प्रसार विभिन्न माध्यमों से किया। 5 किलो, 3 किलो, 1 किलो की थैलियां समिति में निरन्तर उपलब्ध रहती थी जो समिति के अलावा विभिन्न उत्पादकों से बिक्री के लिए आती थी। हमारे विशेषज्ञ श्री एम. एल.के. मेहता की पारिवारिक परिस्थितियों के कारण 2007 से यह कार्य प्रशिक्षण, सलाह एवं साहित्य तक ही सीमित रहा।

2007 की जनवरी में विज्ञान समिति के बड़े सभागार का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस कारण

वर्मीकम्पोस्ट कल्चर यूनिट को हटाना पड़ा। तब से वर्मीकल्चर तथा वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन समिति में नहीं हो रहा है। बाहर से बिक्री के लिए आता है। विज्ञान समिति के कार्यकत्ताओं ने वर्मीकम्पोस्टिंग के निम्नांकित केन्द्र देखे – बैफ, नाथद्वारा के पास गौशाला, राजसमन्द, बूझड़ा, वन विभाग के निजी कम्पनी गोवर्द्धन विलास की ओर, गोधाजी का फार्म।

विज्ञान समिति ने बड़ी यूनिट्स बनवाई – गौशाला कानोड़ व गोवर्द्धन विलास, नाई।

यद्यपि किसानों ने वर्मीकम्पोस्ट की उपयोगिता को तो भलीभांति समझा है पर छोटे तौर पर कार्य उनको व्यावहारिक व आर्थिक नहीं लगता। न खेतों की बड़ी आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है। किन्तु पौधों, लॉन के व किचन गार्डनिंग के लिए इसकी उपयोगिता स्पष्ट सिद्ध हुई है।

foKku xke ;k t uk %

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान ने विज्ञान समिति में 'विज्ञान ग्राम योजना चन्देसरा' के नाम से 1997 में स्वीकृत की। तब से यह योजना चल रही है। इस योजना के अंतर्गत कोई कार्यकर्ता नहीं दिया गया है। न कोई निश्चित कार्यक्रम है। न कोई निश्चित बजट। प्रतिवर्ष समिति कुछ प्रस्ताव भेजती है, उसमें से कुछ कार्यक्रम स्वीकृत होते हैं तथा काफी कम राशि प्राप्त होती है। कभी–कभी अपनी ओर से भी कार्यक्रम दे देते हैं। प्रारम्भ में इस कार्यक्रम की क्रियान्विति चन्देसरा में ही की किन्तु धीरे–धीरे यह लगने लगा कि लोग पूरी रूचि नहीं दिखा रहे हैं। अतः विभाग से राय कर अन्य गांवों में योजना की क्रियान्विति प्रारम्भ की। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अतिरिक्त भी कुछ अन्य विभागों, संस्थाओं के सहयोग से प्रौद्योगिकी की जानकारी कराई गई।

योजना का उद्देश्य –

गांवों में प्रौद्योगिकीय जानकारी बढ़े एवं उनके उपयोग की विधि समझायी जाए। उपकरणों की व्यवस्था की जाय। अंधविश्वास दूर हो। अब तक निम्नांकित प्रौद्योगिकीय जानकारी कराई गई है :–

1. पशु आहार कुण्डी मेंजर्स
2. पशु चिकित्सा शिविर
3. सर्फ बनाना
4. सब्जियों के उन्नत बीज
5. लॉ कोस्ट लेट्रिनस
6. मशरूम उत्पादन
7. वर्मी कम्पोस्टिंग
8. उन्नत कृषि विधियां
9. उन्नत फल पौधे
10. फल–सब्जियों में वेल्यू एडिशन
11. उन्नत चूल्हे
12. अनाज भंडारण सुरक्षा विधियां एवं भण्डारण कोठियां
13. उन्नत पशुस्थल
14. फ्लोराइड विमुक्त इकाई
15. उन्नत शवदाहगृह
16. अनाज साफ करने की मशीन
17. रस्सी बनाने की मशीन
18. पत्तल–दोने की मशीन

19. मसाला पीसने की मशीन
20. प्याज भंडारण यूनिट
21. सोलर कम्प्यूटर एवं नेटवर्किंग
22. सोलर वाटर हिटर
23. उन्नत पशुनस्ल
24. उन्नत पशुआहार
25. करंज के तेल से डीजल इंजन चलाना
26. वृक्षारोपण
27. गोबर गैस प्लान्ट्स
28. कम्प्यूटर क्षमता प्रदर्शन
29. मशरूम व्यंजन निर्माण
30. मूंगफली छिलने की मशीन
31. कुट्टी काटना
32. मक्का छिलने की डिवाइस
33. रक्त एवं रक्तदान
34. अंकुरित दालें
35. बांटा कूकर
36. फूलों की वैज्ञानिक खेती

अंधविश्वास दूर करने के कार्यक्रम :–

1. सूर्य और चन्द्र ग्रहण संबंधी (वार्ताएं व प्रदर्शन)
2. सांप के काटने पर देवरे जाने के कारण समय पर चिकित्सा न हो पाने से हानि
3. डायन समस्या
4. जादू बताने वालों की ट्रिक्स
5. महिला का संतान न होने अथवा लड़कियां ही होने पर उसका उत्तरदायी न होना
6. बीमारियों के संबंध में देवीय प्रकोप संबंधी

अन्य कार्यक्रम :–

1. पर्यावरण संबंधी – चर्चा, संगोष्ठी, रैली, गाजर घास उन्मूलन
2. स्वच्छता
3. मेडिकल केम्प
4. आंखों के ऑपरेशन
5. विज्ञान दिवस
6. औषधीय पौधे

विज्ञान मेले –

विज्ञान मेले विज्ञान समिति की उपज है। गांवों में त्रिदिवसीय मेलों का आयोजन किया गया। मेलों में प्रदर्शनी, प्रदर्शन, वार्ताएं, प्रतियोगिताएं, स्वास्थ्य परीक्षण प्रमुख बिन्दु रहे। ग्रामीण जीवन से संबंधी सभी वैज्ञानिक पहलुओं पर संबंधित तकनीकों का समावेश किया जाता था। ये मेले ज्ञानवर्द्धन के लिए एवं अंधविश्वास दूर करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। इन मेलों में कई संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ।

efgyk l'kfDrdj.k ds vU; dk;Z%

महिला सशक्तिकरण के कार्य विज्ञान समिति में अप्रेल, 1987 से प्रारम्भ हुए जब राज्य सरकार ने समिति में उदयपुर जिला 'इडारा' स्वीकृत किया। यह कार्य वर्ष 2000 तक चला। अप्रेल, 2000 से राज्य के पूर्व मुख्य सचिव श्री एम. एल. मेहता समिति के अध्यक्ष बने। उनकी अध्यक्षता में चर्चा कर यह निश्चित हुआ कि ग्रामीण महिला विकास का कार्यक्रम हमें अपने ही स्तर पर चालू रखना चाहिए और महिलाओं के स्वयं सहायता समूह बनाने चाहिए। इस प्रक्रिया को समझ कर गांवों में वातावरण बनाना प्रारम्भ

किया। महिलाओं का प्रशिक्षण किया। बैठकें प्रारम्भ हुई। प्रथम समूह विष्णु की अध्यक्षता में बना एवं उसके नाम पर ही समूह का नाम रखा गया। धीरे–धीरे और समूह बने और अप्रेल 2001 में घणोली में एम.एल. मेहता सा. की अध्यक्षता में कार्यक्रम रखा जिससे और लोगों को समूह बनाने की प्रेरणा मिली।

समूहों के बैंकों में खाते खुलवाना प्रारम्भ किया और उनको बैंकों से ऋण दिलवाने का कार्य शुरू हुआ। समूह बनाने के कार्यों में आर्थिक सहयोग के लिए नाबार्ड को योजना भेजी जो पहले 50 समूहों के लिए स्वीकृत की। डीआरडीए में भी बीपीएल समूह बनाने के लिए फेसीलीटेट के रूप में स्वीकृति मिली। समूहीकरण व लोन से निम्नांकित लाभ स्पष्ट प्रकट हुए :–

1. निश्चित मासिक बचत।
2. छोटे–छोटे ऋण द्वारा गृह व्यवस्था में सुधार।
3. बैंक ऋण से आर्थिक मासिक आमदनी बढ़ी, पुराना कर्ज चुकाया जिससे अधिक ब्याज का बोझ घटा।
4. मासिक मिलन से समूह सदस्यों में आपसी संबंध प्रगाढ़ होते गए और संगठित शक्ति उभरी।
5. बैठकों में विज्ञान समिति के माध्यम से नई–नई जानकारियां मिलती रही जिससे जागरूकता बढ़ी।
6. अपने (समूह के) धन की व्यवस्था (हिसाब / लेनदेन) करना सीखा।
7. बैंक अधिकारियों से बात करना सीखा।
8. समूह की आपसी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता बढ़ती गई।
9. आत्मविश्वास बढ़ा।
10. समूह के आधार पर अन्य गतिविधियां भी आयोजित हो सकी, जिसका आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य संबंधी लाभ मिला।

विज्ञान समिति ने केवल समूह बनाना व बैंक ऋण दिलवाने तक ही अपने को संबंधित नहीं रखा अपितु समूहों को समिति का अंग माना और उनके लिए समय–समय पर कार्यक्रम आयोजित किए, उनमें से प्रमुख ये हैं :–

1. समय–समय पर समूह प्रतिनिधियों के सम्मेलन आयोजित किए जिसमें उन्हें समूह संबंधी चर्चा के सिवाय स्वास्थ्य, कृषि, पशुपालन आदि विषयों पर जानकारी कराई। अंधविश्वास दूर करने के लिए विशेष प्रयास किए। समूह का अच्छा कार्य करने वालों को पारितोषिक देकर प्रोत्साहित किया।
2. विशेष स्रोतों से प्राप्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उनको प्रमुखता देकर बुलाया जिससे उन्होंने कई प्रकार के कौशल सीखे।
3. गांवों में सिलाई के प्रशिक्षण शिविर लगाए।
4. गांवों में ही अन्न भंडारण का प्रशिक्षण दिया।
5. गांवों में विज्ञान शिविर लगाए।
6. गांवों में मशरूम प्रशिक्षण के शिविर लगाए।
7. गांवों में वर्मी कम्पोस्टिंग के प्रशिक्षण एवं कल्चर देकर यूनिट लगवाए।
8. उन्नत बीज वितरित कर उनका लाभ समझाया।
9. सब्जियों के उन्नत बीज हर वर्ष दिए जिससे वे सब्जियों का उपयोग कर स्वास्थ्य लाभ कर सकें।
10. महिलाओं के लिए राजकीय योजनाओं की जानकारी समय–समय पर करवाई।
11. गांवों में मेडिकल केम्प लगवाए।
12. गांवों में उन्नत चूल्हे लगवाए।

13. पीड़ित (परित्यक्ता, विधवा, अभावग्रस्त) महिलाओं का सर्वेक्षण किया। यथासंभव उन्हें सहयोग देने का प्रयास किया।

14. कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, डेयरी महाविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, सरस डेयरी उदयपुर, वर्मीकम्पोस्टिंग की इकाइयां आदि की विजिट करवाई।

15. रक्तदान के बारे में बार–बार समझाकर स्वैच्छिक रक्तदान करवाया।

16. स्वयं की एवं बच्चों की शिक्षा के लिए प्रेरित किया, आवश्यकतानुसार सहयोग किया।

17. समिति प्रांगण में 8 हाट मेलों का आयोजन किया जिसमें समूह की महिलाओं द्वारा बनाई सामग्री की लोगों को जानकारी हो सके और अन्य महिलाएं भी सामग्री बनाने के लिए प्रेरित हो।

विशिष्ट प्रायोजनाएं–

हमारे संरक्षक एवं वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री हुकमराज जी मेहता के नाती श्री संदीप बापना जो अमेरिका में विश्व बैंक में कार्य करते हैं उनको प्रेरित किया। उन्होंने पहले कुछ धन इस कार्य में सहयोग के लिए दिया बाद में वे उदयपुर आए गांवों में जाकर कार्य देखा और यह कार्य सुचारू रूप से चलता रहे उसके लिए समिति को दो वर्ष तक अर्थ सहयोग किया जिससे हमने कुछ अगुवा महिलाओं को चुना। उन्हें प्रचेता का पद दिया उनकी मासिक बैठक आयोजित करना प्रारम्भ किया। संचालन समिति बनाई जिसके अध्यक्ष श्री हुकमराज जी मेहता, प्रो. सुशीला अग्रवाल, श्रीमती पुष्पा कोठारी, श्रीमती विमला कोठारी, श्रीमती शकुन्तला धाकड़, डॉ. के.एल. कोठारी तथा पदेन कार्यकारी अध्यक्ष व सचिव थे।

इन बैठकों में –

1. संबंधित समूहों के कार्यों, उनके ऋण एवं ऋण चुकाने की जानकारी लेना। समस्याओं की जानकारी लेना और उनका समाधान देना।

2. नये समूह बनाने की प्रेरणा, बनाने की जानकारी, खाता खुलवाना, रजिस्टर एवं पास बुक देना।

3. विशेषज्ञों को आमंत्रित कर कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य आदि विषयों पर वार्ताएं करवाना।

4. पुस्तक बैंक की व्यवस्था कर प्रचेताओं के माध्यम से गांवों में पुस्तकें पढ़ने के लिए भेजना – दूसरी बैठक में वापस पुस्तकें बदलना।

5. समूहों के सदस्यों की पारिवारिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक जानकारी के लिए प्रोफॉर्मा बनाकर प्रचेताओं के माध्यम से जानकारी एकत्र करना।

6. समूहों के सदस्यों द्वारा ऋण के उपयोग की जानकारी के लिए प्रोफार्मा बनाकर प्रचेताओं के माध्यम से जानकारी प्राप्त करना।

7. समस्याग्रस्त महिलाओं की जानकारी लेने के लिए प्रोफार्मा बनाकर प्रचेताओं के माध्यम से जानकारी एकत्र करना।

8. अखबारों और पुस्तकों में प्रेरणाप्रद जानकारी उपलब्ध कर प्रचेताओं को बताना जिससे उनके जीवन में उत्साह जगे, प्रेरणा मिले।

इसके अलावा इस योजना के अंतर्गत प्रचेताओं को एक–एक थर्मामीटर दिया गया और बुखार नापने का प्रशिक्षण दिया गया जिससे क्षेत्र

में बुखार नापा जा सकें और उसका अंकन कर आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त चिकित्सालय ले जाया जा सके। प्रो. सुशीला अग्रवाल ने एक–एक पुस्तक हर प्रचेता को दी जो अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई। प्रचेता मासिक बैठकों में समिति के रूचिशील सदस्य उपस्थित रहते और अपना–अपना ज्ञान व अनुभव देकर बैठक के कार्य को उपयोगी बनाते। हर बैठक के बाद संभवतया किसी विशेष स्थान का भ्रमण कराया जाता। प्रचेताओं को आने–जाने का किराया, बैठक का मानदेय, जो–जो कार्य किए है, उनका मानदेय तथा नाश्ता प्रोजेक्ट के कोष से कराया जाता। इसमें निम्न महिलाएं प्रचेता नियुक्त की गई थी :–

1. विष्णु – घणोली – संबंधित समूह – 4
2. श्रीमती सोहनी बाई – टूस डांगियान – संबंधित समूह – 7
3. कमला जोशी – नान्दवेल – संबंधित समूह – 6
4. सुन्दर कंवर – देबारी – संबंधित समूह – 16
5. लक्ष्मी – बेदला – संबंधित समूह – 7
6. हेमलता लखारा–सापेटिया–संबंधित समूह–7
7. सविता – छोटी उन्दरी – संबधित समूह – 6

विष्णु के पुनर्विवाह के कारण तथा श्रीमती सोहनी बाई ने स्वास्थ्य के कारण प्रचेता का कार्य छोड़ा, उनके स्थान पर श्री कन्हैयालाल जी नागदा, घणोली तथा श्रीमती हंसा सेन, टूस डांगियान को नियुक्त किया गया। कुछ और उत्साही महिलाओं को इसमें जोड़ा गया –

- **निशा लौहार,** वल्लभनगर, डबोक
- **श्रीमती सुशीला पूर्बिया,** देवाली

नवम्बर, 2008 में श्री संदीप बापना ने स्वयं बैठक में भाग लिया तथा प्रचेताओं के इन्टरव्यू भी लिए जिससे वे बहुत संतुष्ट प्रतीत हुए।

इस योजना के अधोलिखित लाभ रहे –

1. प्रचेताओं की विभिन्न क्षेत्रों में जानकारी काफी बढ़ी।
2. प्रचेताओं ने इस बैठक में आना सम्मानजनक समझा।
3. उनका आत्मविश्वास बहुत बढ़ा।
4. समिति से उनका गहरा जुड़ाव हुआ जिससे कई व्यावहारिक कार्यों में सहयोग मिलता रहा।
5. विष्णु का पुनर्विवाह भी इसकी देन मानी जा सकती है। सविता 12वीं की परीक्षा में पास हुई। कमला जोशी को 12वीं का फार्म भरवाया गया। सुन्दर कंवर को आंगनवाड़ी में कार्य मिला।
6. समूहों के कार्यों में प्रचेताओं का उत्साह बना रहा।
7. उनके व्यवसायों में धनात्मक अंतर आया।
8. उनमें वार्तालाप व शिष्टाचार का विकास हुआ।
9. विज्ञान समिति द्वारा विकसित 'जीवन पच्चीसी' के लगभग हर बैठक में पढ़ने से कई महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं को प्रचेताओं ने समझा जैसे डायन प्रथा पर उनकी समझ में काफी अंतर आया। धूम्रपान, मद्यपान के जहरीले प्रभाव को उन्होंने गहराई से समझा। बालिका की शिक्षा का महत्व समझा। रक्तदान के बारे में समझा व रक्तदान किया।

विशेष कार्य – 2

अभावग्रस्त महिलाओं के कौशल विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी : ग्रामीण एवं अभावग्रस्त महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु कौशल विकास के अवसर एवं कार्यक्षेत्र पर राष्ट्रीय संगोष्ठी राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा प्रायोजित विज्ञान समिति, उदयपुर ने महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं कृषि में महिला अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'इफ्वा' के सहयोग से उदयपुर में 18 से 20 मार्च, 2006 को आयोजित की गई।

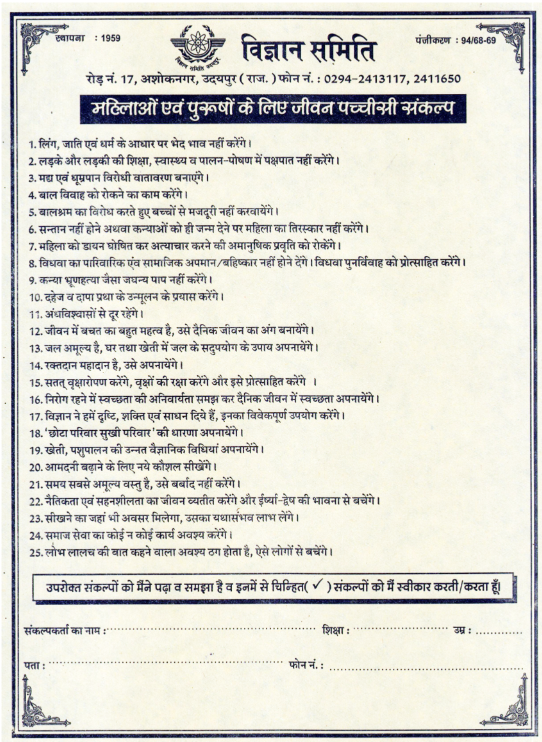

स्थापना : 1959 विज्ञान समिति पंजीकरण : 94/68-69

रोड़ नं. 17, अशोकनगर, उदयपुर (राज.) फोन नं. : 0294-2413117, 2411650

महिलाओं एवं पुरूषों के लिए जीवन पच्चीसी संकल्प

1. लिंग, जाति एवं धर्म के आधार पर भेद भाव नहीं करेंगे।
2. लड़के और लड़की की शिक्षा, स्वास्थ्य व पालन-पोषण में पक्षपात नहीं करेंगे।
3. मद्य एवं धूम्रपान विरोधी वातावरण बनाएंगे।
4. बाल विवाह को रोकने का काम करेंगे।
5. बालश्रम का विरोध करते हुए बच्चों से मजदूरी नहीं करवायेंगे।
6. सन्तान नहीं होने अथवा कन्याओं को ही जन्म देने पर महिला का तिरस्कार नहीं करेंगे।
7. महिला को डायन घोषित कर अत्याचार करने की अमानुषिक प्रवृति को रोकेंगे।
8. विधवा का पारिवारिक एंव सामाजिक अपमान/बहिष्कार नहीं होने देंगे। विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करेंगे।
9. कन्या भ्रूणहत्या जैसा जघन्य पाप नहीं करेंगे।
10. दहेज व दापा प्रथा के उन्मूलन के प्रयास करेंगे।
11. अंधविश्वासों से दूर रहेंगे।
12. जीवन में बचत का बहुत महत्व है, उसे दैनिक जीवन का अंग बनायेंगे।
13. जल अमूल्य है, घर तथा खेती में जल के सदुपयोग के उपाय अपनायेंगे।
14. रक्तदान महादान है, उसे अपनायेंगे।
15. सतत् वृक्षारोपण करेंगे, वृक्षों की रक्षा करेंगे और इसे प्रोत्साहित करेंगे ।
16. निरोग रहने में स्वच्छता की अनिवार्यता समझ कर दैनिक जीवन में स्वच्छता अपनायेंगे।
17. विज्ञान ने हमें दृष्टि, शक्ति एवं साधन दिये हैं, इनका विवेकपूर्ण उपयोग करेंगे।
18. 'छोटा परिवार सुखी परिवार' की धारणा अपनायेंगे।
19. खेती, पशुपालन की उन्नत वैज्ञानिक विधियां अपनायेंगे।
20. आमदनी बढ़ाने के लिए नये कौशल सीखेंगे।
21. समय सबसे अमूल्य वस्तु है, उसे बर्बाद नहीं करेंगे।
22. नैतिकता एवं सहनशीलता का जीवन व्यतीत करेंगे और ईर्ष्या-द्वेष की भावना से बचेंगे।
23. सीखने का जहां भी अवसर मिलेगा, उसका यथासंभव लाभ लेंगे।
24. समाज सेवा का कोई न कोई कार्य अवश्य करेंगे।
25. लोभ लालच की बात कहने वाला अवश्य ठग होता है, ऐसे लोगों से बचेंगे।

उपरोक्त संकल्पों को मैंने पढ़ा व समझा है व इनमें से चिन्हित(✓) संकल्पों को मैं स्वीकार करती/करता हूँ।

संकल्पकर्ता का नाम :........................ शिक्षा :.................. उम्र :..........

पता :........................ फोन नं. :........................

उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि – सुश्री कांता भटनागर, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, मद्रास हाइकोर्ट थी। अध्यक्षता राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष, डॉ. गिरिजा व्यास ने की। कार्यक्रम अनेक सत्रों में आयोजित हुआ। एक विशेष सत्र में अनुशंषाएं विकसित की गई जिसकी अध्यक्षता राजस्थान की वरिष्ठ सचिव श्रीमती रूक्मणी हल्दिया IASS ने की। जो अनुशंषाएं की गई, वे thou iPphlh में दी गई हैं।

इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में समूहों की कई महिलाओं को आमंत्रित किया गया। समूह गान – 'हम होंगे कामयाब' तथा कमला जोशी का 'कमजोर नहीं' बहुत आकर्षक रहे।

सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विशाल सभागार में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। सत्रों के कार्यक्रम – मैनेजमेन्ट कॉलेज तथा डेयरी कॉलेज में आयोजित हुए।

विशेष कार्य – 3

स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया को कोरपस फंड में सहयोग के लिए प्रार्थना पत्र भेजा गया। उन्होंने महिला सशक्तिकरण की गतिविधियों के लिए 5 लाख रू. स्वीकृत कर भेजा। जिसकी एफ. डी. 9 प्रतिशत ब्याज पर करवा दी है। इस सहयोग से श्रीमती मंजुला शर्मा को महिला सशक्तिकरण प्रभारी नियुक्त किया गया है। इससे महिलाओं के कार्य में एक निरन्तरता एवं स्थायित्व प्राप्त हुआ है।

विशेष कार्य–4

कौशल विकास संगोष्ठी की एक प्रमुख अनुशंषा थी अभावग्रस्त महिलाओं के लिए देश के हर जिले पर एक प्रभावी रिसोर्स सेन्टर बनाया जाय। उसको ध्यान में रखते हुए विज्ञान समिति ने निम्नांकित कार्य किए –

1. बड़े सभागार का निर्माण – 2500 वर्गफीट का हॉल निर्माण कराया जिसमें 400 महिलाओं का कार्यक्रम आयोजित किया जा सकता है।दो ओर बड़े सभाकक्ष व्यवहारिक प्रशिक्षण हेतु बनाए गए।

2. सभी सुविधाओं के साथ फूड प्रोसेसिंग लेब, काउन्टर्स, सिंक, सोलर होट वाटर, वेईंग मशीन, रेफ्रीजरेटर–3, मिक्सी, यूटेनसिल्स का निर्माण किया गया।

3. एनआरडीसी के सौजन्य से एक उच्च स्तरीय फूड प्रोसेसिंग पर 2 माह का प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें 25 महिलाएं रिसोर्स पर्सन के रूप में उपलब्ध हुई।

4. सिलाई, कढ़ाई, पीकू, कसीदा कार्य के लिए सुविधाएं विकसित कर दी गई है जिसमें महिलाएं कार्य सीख रही है।

5. बहुसंकायी, बहुअनुभवी, वरिष्ठ विशेषज्ञ समिति के सदस्यों के रूप में उपलब्ध हैं जो रिसोर्स सेन्टर के लिए एक धरोहर है।

विशेष कार्य – 5 कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय का मसाला केन्द्र :–

कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय ने विज्ञान समिति में मसाला पीसने की दो मशीने लगाई है जिनसे मसाला तैयार किया जाता है। इच्छुक महिलाएं इसका लाभ ले रही है।

विशेष कार्य – 6 म्यूजियम

समिति में आने वाली महिलाओं का ज्ञानवर्द्धन होता रहे उस दृष्टि से डिस्प्ले बोर्ड तथा अन्य प्रदर्शन सामग्री तैयार की गई।

विशेष कार्य – 7 पुस्तकालय

लगभग 500 पुस्तकों का एक पुस्तकालय बनाया गया है जिसमें विभिन्न विषयों की पुस्तकें है। समिति द्वारा तैयार किया हुआ साहित्य भी पुस्तकें, छोटी पुस्तिकाएं, फोल्डर्स, पेम्पलेट्स बड़ी संख्या में उपलब्ध है।

विशेष कार्य – 8 प्रशिक्षण सुविधाएं

75 महिलाओं का एक साथ प्रशिक्षण हो सके उसके लिए प्रशिक्षण हॉल, प्रोजेक्शन सुविधाएं उपलब्ध है। प्रायोगिक प्रशिक्षण के लिए एक साथ 25 महिलाओं के लिए 'लेब' सुविधाएं विकसित की है।

विशेष कार्य – 9 नेटवर्किंग

सरकारी कार्यालयों, विश्वविद्यालयों के विभिन्न विभागों एवं अन्य संस्थाओं, चिकित्सकों से समिति का गहन संबंध है जिससे महिलाओं की किसी समस्या का समाधान कराना आसान हो जाता है।

घणोली गांव का विकास :

ग्राम पंचायत – नामरी, पंचायत समिति – मावली डबोक एयरपोर्ट से 2 कि.मी. एवं उदयपुर से 25 कि.मी. दूर स्थित इस गांव का सर्वांगीण विकास के लिए चयन किया गया।

विज्ञान समिति के सदस्यों ने इस गांव में सन् 2000 में जाना प्रारम्भ किया। कैलाश की बहन का घणोली में ससुराल था। अतः जब गांवों में महिला समूह बनाने का निर्णय हुआ तो कैलाश की राय से इसी गांव में पहला समूह विष्णु महिला स्वयं सहायता समूह बना। इस गांव में अब तक कार्य करते हुए 10 वर्ष हो चुके हैं। जो कार्य हुए है उनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है :–

1. समूहीकरण

- महिला स्वयं सहायता समूह – 5
- कृषक स्वयं सहायता समूह पुरूष – 2 (सदस्य 35)

2. प्रशिक्षण

- मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण

- वर्मीकम्पोस्ट प्रशिक्षण
- समूह संचालन प्रशिक्षण
- पोस्ट हार्वेस्टिंग स्टोरेज प्रशिक्षण
- सिलाई प्रशिक्षण
- सर्फ बनाने का प्रशिक्षण

3. उन्नत प्रौद्योगिकी सामग्री लगवाई / बनवाई

- डिफ्लोरिडेशन यूनिट
- ग्रेन क्लीनिंग एवं स्टोरिंग मशीन
- पलवेराइजिंग मशीन
- प्याज भंडारण यूनिट
- उत्तम पशु–स्थल इकाई
- अन्न भण्डारण कोठियां
- उन्नत धुआं रहित चूल्हे
- बांटा कूकर
- वर्मीकम्पोस्ट निर्माण छोटी इकाइयां

4. शिक्षा संबंधी

- गांव के माध्यमिक विद्यालय में पिछले दस वर्षों में कई बार वृक्षारोपण
- 50 ट्री–गार्ड्स दिए
- विद्यालय में पाइप लाइन लगवाने में सहयोग किया
- दो बार विज्ञान दिवस मनाया
- बच्चों को समय–समय पर प्रेरणात्मक संदेश दिए
- गणित की पढ़ाई के लिए अध्यापक का प्रबन्ध किया।
- 2008 में 24 बच्चों को छात्रवृत्तियां दी।
- 2009 में 7 बच्चों की आवश्यकता की पूर्ति की एवं .... बच्चों को स्वेटर दिए
- एक बड़ी दरी व पढ़ाई हेतु 6 डेस्क (6' x 1¼'_ दी

5. अन्य कार्य

- गांव का सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण करवाया।
- महिला समूहों का बड़ा सम्मेलन किया जिसमें घणोंली के आसपास के गांवों की लगभग 300 महिलाएं आई। इस अवसर पर ज्ञानप्रद वार्ताएं तथा प्रदर्शनी भी लगी।
- 6 जून, 2008 को पर्यावरण समस्याओं पर आधारित एक संगोष्ठी आयोजित की, जिसमें उदयपुर की 6 संस्थाओं ने भाग लिया। गांववालों की रात में अच्छी उपस्थिति रही।
- गांव के 105 स्त्री–पुरूषों को दिल्ली आदि स्थानों का भ्रमण करवाया।
- श्रीमती विष्णु वैष्णव (परित्यक्ता) का आत्मविश्वास जगाकर उसे आंगनवाड़ी वर्कर बनाया तथा उसके माता–पिता को पुनर्विवाह के लिए प्रेरित किया। उसका पुनर्विवाह हो चुका है और सुखी जीवन जी रही है।

6. गांव के स्त्री–पुरूशों को उदयपुर की संस्थाएं दिखाई गई :–

- कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय का नवीन ऊर्जा विभाग, फसल कटाई उपरान्त मूल्य संवर्द्धन विभाग, मृदा एवं संरक्षण विभाग, यांत्रिकी विभाग
- डेयरी महाविद्यालय की खाद्य सामग्री परिरक्षण विभाग की मशीने

- कृषि महाविद्यालय में हाईटेक खेती, औषधीय पौधों की इकाई। उद्यान, डेरी यूनिट।
- वल्लभनगर डेयरी फार्म
- कृषि विज्ञान केन्द्र, विद्याभवन
- सरस डेयरी प्लान्ट
- पशु चिकित्सालय
- गांव के प्रतिनिधियों को समिति के विभिन्न कार्यक्रमों में बुलाया गया जिससे उनकी जानकारी बढ़ती गई।
- गांव में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, विशिष्ट व्यक्तियों, वैज्ञानिकों, विदेशियों की विजिट करवाई।
- गांव के पशुओं पर एक अध्ययन किया गया कि पशुआहार में सालीभेट मिलाने का दूध के उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ता है। धनात्मक प्रभाव स्पष्ट प्रतीत हुआ।
- गांव में दो मेडिकल केम्प लगवाए, मुफ्त आंखों के ऑपरेशन हुए।
- गांव में एक मेला आयोजित किया गया जिसमें कई शारीरिक, मानसिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। पुरस्कार दिए गए।
- समिति द्वारा विकसित 'जीवन पच्चीसी' का व्यापक प्रचार–प्रसार किया गया और यह प्रक्रिया निरन्तर है।
- सब्जियों के उन्नत बीज प्रतिवर्ष निःशुल्क बांटे जाते हैं।
- कृषि प्रदर्शन के लिए कई बार बीज दिए।
- गांव में वृक्षारोपण के लिए कई बार पौधे दिए।
- प्रतिवर्ष खरीफ व रबी के पहले गांव के प्रतिनिधियों की कृषि विशेषज्ञों से वार्ता कराई जाती है जिससे कृषि में नवीनतम जानकारी उपलब्ध हो जाती है।
- संदीप बापना प्रोजेक्ट में विष्णु को प्रचेता बनाया गया। उसके विवाह के बाद कन्हैयालाल जी को यह उत्तरदायित्व दिया। मासिक बैठकों में उनकी उपस्थिति का गांव में लाभ पहुंचता है।
- पिछले 2 वर्षों से दिसम्बर, 2008 तथा दिसम्बर, 2009 में धीरूभाई अम्बाली इंस्टीट्यूट के विद्यार्थी विज्ञान समिति में इन्टर्नशिप पर आ रहे हैं। वे घणोली में कई–कई दिन रहे और परिवारों से संपर्क किया। ऐसे सघन संपर्क का निश्चित ही लाभ पहुंचता है।
- रक्तदान के संबंध में कई बार वार्ताएं करवाई। फलस्वरूप कई लोगों ने स्वैच्छिक रक्तदान किया। दो बार रक्तदान शिविर लगाए गए।
- प्रतिवर्ष सर्दियों के प्रारम्भ में सदस्यों के घरों से आए कपड़े अभावग्रस्त परिवारों में वितरित किए जाते हैं।
- धूणीमाता पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- स्वाइन फ्लू एवं अन्य समसामयिक बीमारियों की आवश्यक जानकारी करवाई गई।
- विज्ञान समिति में आजीविका मिशन के समय–समय पर चल रहे प्रशिक्षणों की जानकारी हर प्रशिक्षण से पूर्व कराई जाती है जिससे उसके योग्य व्यक्ति वंचित न रहे।
- कम्प्यूटर प्रशिक्षण।
- बस के लिए प्रयास।
- विद्यालय माध्यमिक बने इसके लिए प्रयास।
- चिकित्सा केम्पस।

फोल्डर – विज्ञान समिति अपने उद्देश्यों, गतिविधियों एवं सदस्यों के बारे में नियमित जानकारी फोल्डर्स के माध्यम से प्रकाशित करती रही है। पिछले वर्षों में तीन फोल्डर्स प्रकाशित किये गये।

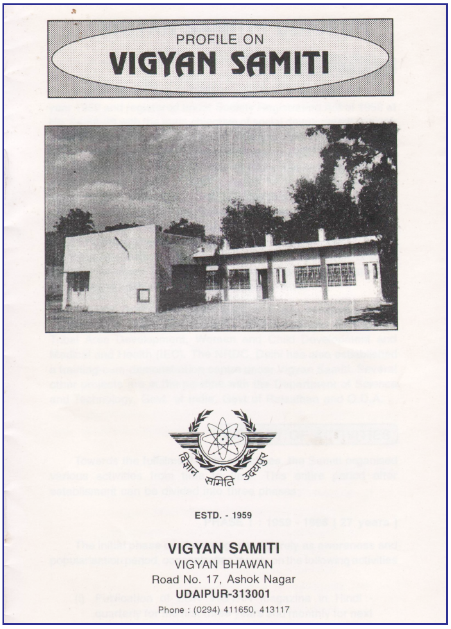

वार्षिक प्रतिवेदन – विज्ञान समिति के दैनिक कार्यों एवं सदस्यों की उपस्थिति नियमित रूप से दैनिक डायरी में अंकित की जाती है। इसी के आधार पर वार्षिक प्रतिवेदन तैयार कर उसे सदस्यों, राज्य सरकार के विभिन्न विभागों, परियोजना एवं संगोष्ठी प्रायोजकों आदि को नियमित रूप से भेजा जाता है। कुछ कुछ वार्षिक प्रतिवेदन के मुख पृष्ठ यहाँ दर्शाये जा रहे हैं।

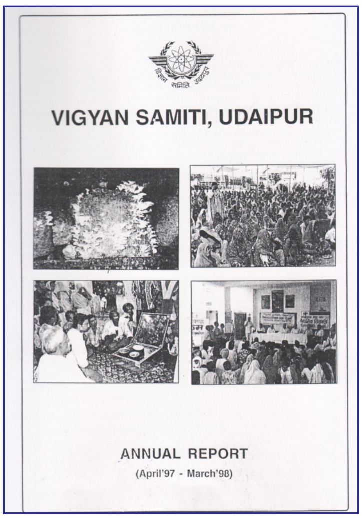

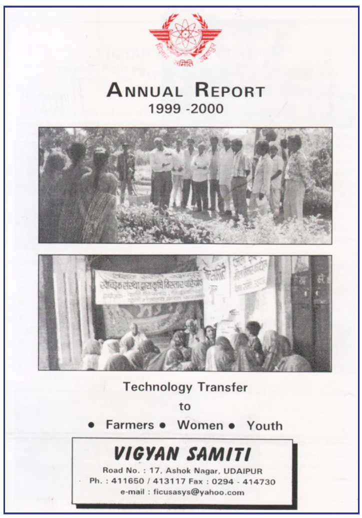

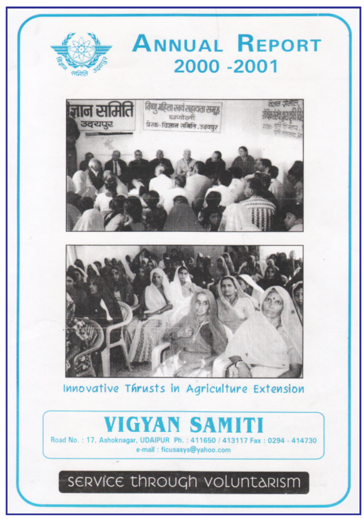

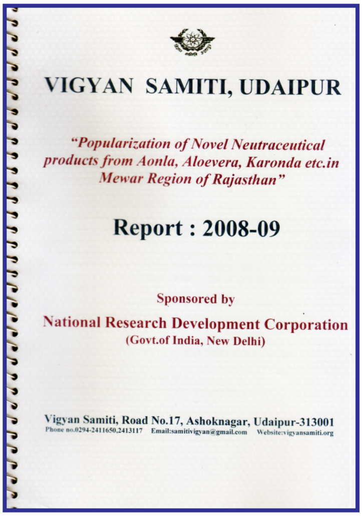

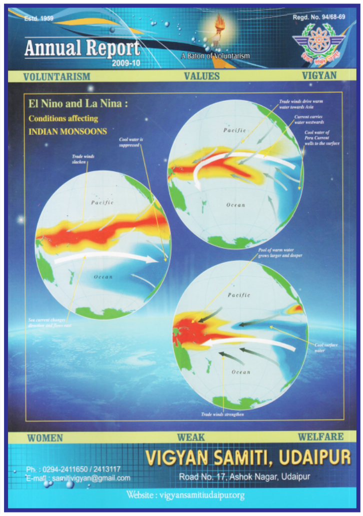

विज्ञान समिति के अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र

- विज्ञान ग्राम योजना-ग्राम स्वास्थ्य अभियान क्लोरीन मुक्त पेयजल
- मशरूम उत्पादन एवं उपयोगिता-प्रचार प्रसार
- वर्मीकम्पोस्ट प्रशिक्षण, सहवर्द्धन एवं विपणन
- पर्यावरण संरक्षण, बंजर भूमि हरितिमा विकास, वानस्पतिक विविधता अनुसंधान
- ग्रामीण कौशल अभिवर्द्धन योजना
- उदयपुर जिला कृषि विस्तार कार्यक्रम (कृषि निदेशालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित)
- राजस्थान आजीविका मिशन प्रशिक्षण ग्रामीण कौशल अभिवर्द्धन